आपके पत्र

दीवाना नं० २५ बुकस्टाल पर एक दिन लेट पहुंच गया, पर मुख पृष्ठ देख कर ही हंसी आई। चिल्ली ने ऐसे-ऐसे कमाल किये तो चिल्ली के पैसे बच जायेंगे। इस पर सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, फैण्टम, मदहोश सभी फीचर अच्छे थे। आज पत्र लिखने का कारण यह है कि आप हमारे नेपाल में लेट ही दीवाना भेजते हैं। इसी कारण हम लोग किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते। कृपया या तो आप दीवाना जल्दी ही भेज दीजिए या प्रतियोगिता की अंतिम तिथि बढ़ा दीजिए। बहुत दिनों से दीवाना में चिल्ली लीला और बच्चा झमूरा को नहीं देख पाये। कृपया आप जल्दी ही इन्हें दीवाना में हाजिर कीजिये। आपने जो अंक नं० २१ में 'आप भी कलाकार हैं' स्तम्भ रखा था उसके लिये धन्यवाद ! आप ये स्तम्भ हर दीवाना में प्रकाशित कीजिए तो सोने में सुहागा जैसा होगा। अगले अंक का इन्तजार।

दिनेस राज बज्राचार्य—नेपाल

यहाँ से तो दीवाना समय से ही भेजी जाती है। यदि आपको भविष्य में भी लेट पहुंचेगी तो प्रतियोगिताओं की तिथि बढ़ा दी जायेगी। चिल्ली लीला अभी कुछ दिन और नहीं छप सकेगी। सं०

अंक २६ प्राप्त हुआ। यह अंक नये आकार का था। नया आकार पुराने आकार से बेकार है। मोटू-पतलू, काका के कारतूस आदि सब पसन्द आये। फिल्मी पन्ना न होने की वजह से दीवाना खाली-खाली लग रहा है। नये आकार को छोड़ कर बाकी सब स्तम्भ पसन्द आये।

विवेक शंकर शुक्ल—लखनऊ

दीवाना पत्रिका पढ़ कर ऐसा लगा कि यही पत्रिका पाठकों का भरपूर मनोरंजन कर सकती है। यह पत्रिका एक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है, इसमें सन्देह नहीं। पंचतंत्र स्तम्भ द्वारा बताई गई शिक्षा अमूल्य है। पत्रिका की लोकप्रियता के आधार पर कहा जा सकता है कि यह पत्रिका हिन्दी पत्रिकाओं में अपना अलग महत्व रखती है।

नवीन तनेजा—सहारनपुर

दीवाना का नया अंक २६ आज ही मिला। आपने अब इसके आकार में परिवर्तन करके मेरे मन की बात पूरी कर दी है। भविष्य में भी इस प्रकार ही दीवाना प्रकाशित करें। इस अंक में सभी सामग्रियां आपने नये ढंग से प्रकाशित कीं, जिससे दीवाना की शोभा बढ़ गई। विशेषकर फिल्मों की अच्छी खबरें बुरी खबरें, पंचतंत्र, साक्षातकार मोटू-पतलू, फैण्टम, दीवाना कार्ड सवाल यह है? कहानी ठोकर, प्रतिज्ञा, कवितायें तरक्की, रेट और शेर का रोल बेहद पसन्द आए। कृपया साप्ताहिक भविष्य बंद कर दें जिससे पाठकों के अधिक से अधिक पत्र प्रकाशित हो सकें तथा मुख पृष्ठ पर दीवाना का अंक नं० जरूर प्रकाशित करें। **सत्यपाल बधावन 'कुकु'—कतरासगढ़**

दीवाना का अंक २६ समय से एक दिन पूर्व मिला। इस बार तो मैं 'दीवाना' को इतने बड़े आकार में देखकर हैरत में रह गया। मैंने ऐसा पहली ही बार हास्य व्यंग्य की पत्रिकाओं में देखा। और भी पत्रिकायें हैं जो कि दीवाना से लम्बाई-चौड़ाई में कम होती है और इस बार अंक २६ में तो आपने कमाल ही कर दिया। इतनी लम्बी-चौड़ी दीवाना पाकर मेरा दिल बहुत खुश हुआ। इस अंक में मुझे पंचतंत्र, मोटू पतलू, सिलबिल पिलपिल देश बचाओ अभियान, आपस की बातें, काका के कारतूस, परोपकारी वगैरहा-वगैरहा सब कुछ अच्छा लगा। (ठोकर) धारावाहिक उपन्यास का अन्तिम भाग बहुत ही अच्छा लगा। सम्पादक जी क्या आप मेरे अनुरोध पर अमिताभ बच्चन व हेमा मालिनी पर लेख छपवा सकते हैं।

मुन्ना बाबू 'खल्लईया'—कानपुर

इस पर हम पहले भी कई बार लेख छाप चुके हैं। आपकी फर्माइश भविष्य में अवश्य पूरी की जायेगी। सं०

मुख पृष्ठ पर

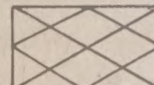
जाको राखे साइयां
मार सके न कोय
बीच समुद्र फंस कर भी
बाल न बांका होय।
बाल न बांका होय
प्रभु की कैसी माया
इतने बड़े समुद्र में
कुंआ एक बनाया ॥

अंक : ३०, १६ अगस्त से २२ अगस्त १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

साप्ताहिक भविष्य



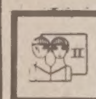
१६ अगस्त से २२ अगस्त १९७९ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



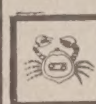
मेष : यह सप्ताह मिश्रित फलों वाला है। व्यापार से यथार्थ लाभ, सहयोगी अंगसंग रहेंगे, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी, परिवार से सुख, यात्रा सफल परन्तु दिन ठीक नहीं, स्वभाव में गुस्सा।



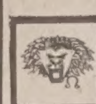
वृष : इस सप्ताह शुभ अशुभ मिश्रितफल मिलेंगे, सफलता प्राप्ति के लिए बार बार प्रयास करना पड़ेगा, निराशा और उदासीनता का सामना, कारोबार यथापूर्व, लाभ अच्छा होता रहेगा, यात्रा न करें।



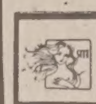
मिथुनः कारोबार सुधरेगा, भाग्य आपका साथ देगा और प्रयास करने पर सफलता भी मिलती रहेगी, परिवार से सुख-सहयोग, हालात पहले से ठीक चलेंगे, आर्थिक लाभ बढ़ेगा, किसी बने काम में बिगाड़ होगा।



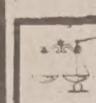
कर्क : सप्ताह दिलचस्प भी है और संघर्षमय भी, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय होगा, धर्म-कर्म में रुचि, किसी नई योजना पर विचार, रोग-शत्रु एवं रुकावटों पर विजय पाएंगे।



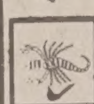
सिंह : यह सप्ताह आपके लिए अच्छा भी है और कुछ संघर्षमय भी, आर्थिक क्षेत्र में विकास होगा और लाभ के साधन भी बनते रहेंगे, नातेदारों से कुछ परेशानी, किसी काम में रुकावट परिश्रम करने से सफलता मिलेगी।



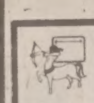
कन्याः यह सप्ताह संघर्षमय होने पर भी दिलचस्प रहेगा, परिश्रम करने पर भाग्य आपका साथ देगा और कामों में सफलता मिलती रहेगी, नई योजना पर व्यय करेंगे, समस्याएं बढ़ेंगी, व्यय बढ़ेगा।



तुला : व्यर्थ के कामों में समय खराब, व्यय बढ़ेगा, यात्रा छोड़ दें, अन्य दिनों में व्यापारिक और आर्थिक दृष्टि से सप्ताह आपके लिए लाभप्रद रहेगा, कामकाज में उन्नति होती महसूस होगी, आय में वृद्धि।



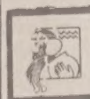
बृश्चिक : व्यर्थ के कामों पर व्यय, सेहत को संभाले रखें, हानि का भय है, वैसे यह सप्ताह पहले से काफी अच्छा है और कुछ विशेष कामों में सफलता भी मिलती रहेगी, दौड़ धूप काफी रहेगी, कारोबार में सुधार।



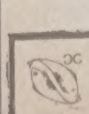
धनु : दिन ठीक नहीं, सेहत बिगड़ेगी, काम समय पर न बन सकेंगे, अन्य दिनों में शुभ-अशुभ मिले-जुले फल मिलते रहेंगे, यात्रा सफल परन्तु सावधानी से करें, कारोबारी हालात प्रायः ठीक चलेंगे।



मकर : विगत सप्ताह की तुलना में इस सप्ताह को अच्छा कहा जा सकता है, आर्थिक दृष्टि से सप्ताह के अन्तिम दिन अधिक लाभप्रद रहेंगे, स्थाई काम धन्धों में उन्नति, लाभ बढ़ेगा, ऋण से मुक्ति मिलेगी।



कुम्भः काफी परेशानी एवं निराशा का सामना, संघर्ष कर. पर भी काम न बन सकेंगे, घरेलू वातावरण भी उलझा सा रहेगा, अन्य दिनों में यात्रा सफल रहेगी, कुछ जरूरी काम बन जायेंगे।



मीनः पिछले सप्ताह की अपेक्षा यह सप्ताह अच्छा रहेगा, वैसे सप्ताह के अन्तिम दिन अधिक लाभप्रद रहेंगे, व्यय यथार्थ, आर्थिक

2400.00
4200.00




परोपकारी
क्यों प्रकाश भाई, क्या हाल-चाल हैं ?
हमारा क्या हाल होगा, हम तो बेहाल हैं ।
मेरा मतलब यह है कि तुम्हें कोई नौकरी मिली कि नहीं ।
नौकरी ? कहां मिलती है, मैं तो साल भर से मारा-मारा फिर रहा हूं ।
हूं, यह तो बड़ी बुरी बात है ।
पर तुम चिन्ता मत करो, मैं तुम्हें नौकरी दिलवाऊंगा ।
नहीं-नहीं परोपकारी जी मजाक मत कीजिए, मुझे कभी नौकरी नहीं मिलेगी ।
कैसी बातें करते हो ? तुम कल ही मेरे साथ चलो अपने एक दोस्त के यहां तुम्हें नौकरी दिलवा दूंगा ।
ल ही ? नहीं-नहीं, कल तो मैं नहीं जा सकता ।
कल तो मुझे बेरोजगारों की रैली में जाना है ।

ात-बे-बात की


ोविंद, मुझे अपना एक दांत उखड़-ाना है। तुम मेरे पुराने दोस्त हो-
मुझ से तो कम फीस लोगे न ?
नहीं, फीस तो पूरी लूंगा। लेकिन दोस्ती के नाते एक दांत के साथ दूसरा दांत मुफ्त में उखाड़ दूंगा !

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



पवन गुप्ता, दाल बाजार, लश्कर

प्र० : असली नेता की पहचान क्या है ?

उ० : मन के भीतर क्या भरा, पता न लगने देय
इस्तीफा दे आज वह, कल वापस ले लेय ।

प्रेम

प्र० : आपके कारतूसों की स्पीड क्या है ?

उ० : कारतूस रफ्तार से, वाकिफ हैं सब फ्रैण्ड,
पलक मारते, हाथरस से पहुंचें इंग्लैण्ड ।

गुरमेज सिंह, झरिया—(बिहार)

प्र० : क्या हमको 'दीवाना' के 'मोटू' की मूंछ का एक बाल मिल सकता है ? कीमत कुछ भी देनी पड़े ?

उ० : दीवाना में देखकर, मोटूमल का चित्र,
मारो कैंची, मुफ्त में बाल काट लो मित्र ।

दीपक कुमार चौरसिया, बलिया बाजार (बिहार)

प्र० : प्यार के लिए नारी को ही महत्व क्यों दिया जाता है ?

उ० : नारी भारी आजकल, उसकी नहिं दरकार,
मंत्री पद की सीट से, नेता करते प्यार ।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर, नैनीताल

प्र० : हरफन मौला में और आप में क्या अंतर है काका ?

उ० : हरफन मौला वही जो, हरफन में हुशियार
हम तो केवल एक फन कविता के फनकार ।

रामचंद्र, बाजपुर (नैनीताल)

प्र० : छेड़खानी करने पर कोई लड़की चप्पल मारे तो मजा लड़की को आएगा या लड़के को ?

उ० : बतलाते हैं आपको, अंदाजन तादाद,
दोनों को ही प्राप्त हो, फिफ्टी-फिफ्टी स्वाद ।

किशन चंद्र अरोड़ा 'मधु', फरीदाबाद

प्र० : मैंने अब तक जिस-जिस से प्यार किया, अधूरा ही क्यों रह गया ?

उ० : प्यार किसी का आज तक, पूरा हुआ न होय,
जनता पार्टी के घटक, रहे प्यार को रोय ।

देवानी, आगरा

प्र० : प्रेमिका रूठ जाने के बाद और भी हसीन लगे तो उसे क्या कहेंगे ?

उ० : खता साबित करेंगे अपनी, और हम खूब छेड़ेंगे,
सुना है उनको गुस्से में, लिपट जाने की आदत है।

नरेश कुमार बुड़ाकिया, बरहज बाजार

प्र० : भगवान को सुख में याद करना चाहिए या दुख में ?

उ० : सुख में प्रभु की याद से, समय होय बरबाद,
सुख में ऐश उड़ाइए, दुख में करिए याद ।

अमर कुमार श्रेष्ठ 'मंजु', फतेहपुर, नेपाल

प्र० : मेरा फोटो दीवाना में अभी तक नहीं छपा है, क्या करूं ?

उ० : पालिश करके ज्ञान की, कलाकार बन जाए,
चेहरे पर आए चमक, फौरन ही छप जाए ।

बलबीर कुमार 'गम्भीर', आबूरोड

प्र० : फिल्मों में किसी हीरो को देखकर आपके बारे में काकी जी क्या सोचती होंगी ?

उ० : यदि लम्बू अमिताभ के, होते आप समान,
लगा लगाकर सीढ़ियां, मलने पड़ते कान ।

मोहम्मद रफी, पानीपत

प्र० : काकी में और आप में नोंक-झोंक चलती रहती है तो दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेते ?

उ० : वो है बेजायका शरबत, न हो तुर्शी जरा जिसमें,
विसाले यार में भी चाहिए तकरार थोड़ी सी ।

कल्याण सिंह ढकनी, बरेली

प्र० : प्रेमिका को दिल, मजदूरों को मिल, सरकारों को बिल तो आपको ?

उ० : दिल, मिल, बिल अपने लिए, हैं सारे ढिलमिल्ल,
मजा हमें आता, करे जब काकी किलकिल्ल ।

किशोर कुमार जैन, विजय नगर (असम)

प्र० : लड़की ने मेरी शक्ल और अक्ल दोनों नाप ली हैं, लेकिन लिफ्ट नहीं दी ?

उ० : पाया होगा शक्ल से, हाफ अक्ल का नाप,
उसकी आशा छोड़ कर, रस्ता नापो आप ।

देवकीनंदन राठोरिया, उज्जैन

उ० : संसार में मां की ममता क्यों महान मानी जाती है ?

प्र० : इमरजेंसी में रहा, इन्दिरा को आक्रोश,
फिर भी अपने पुत्र के, माफ किए सब दोष ।

कृपाल सिंह, बाजपुर रोड, काशीपुर

प्र० : काका जो, आपकी प्रशंसा कैसे करूं, कुछ करते हुए डर लगता है ?

उ० : पुल बांधों तारीफ के, पाठक हों नाराज,
हमें प्रशंसा-प्रिय कहें, तुमको मक्खन बाज ।

संजय कुमार सिन्हा, छोबया टोला, पूर्णिया

प्र० : अधिक ईमानदारी और जिद का अंत क्या होता है ?

उ० : राजनीति में देख लो, है प्रत्यक्ष प्रमाण,
मुरार जी का कर दिया, जनता ने कल्याण ।

भगवतशरण उपाध्याय, पिथौरागढ़

प्र० : यदि दिन और रात नहीं होते तो ?

उ० : काका कवि से किस तरह करते वार्तालाप,
रात दिना के बिना क्यों, जीवित रहते आप ।

जुगल किशोर शर्मा, नई दिल्ली

प्र० : दिल्ली में पानी का घनघोर संकट क्यों आया ?

उ० : आई थी जब बाढ़ तब, कहाँ छिपे थे आप,
बदला लेकर प्रकृति ने, किया बराबर नाप ।

नरसिंह प्रसाद, पिपरिया पोखरी, वाराणसी

प्र० : जब दिल से दिल की टक्कर होती है, तो क्या होता है ?

उ० : अग्नि निकलती रगड़ से, जानत हैं सब कोय,
दिल टकराएं, इश्क की बिजली पैदा होय ।

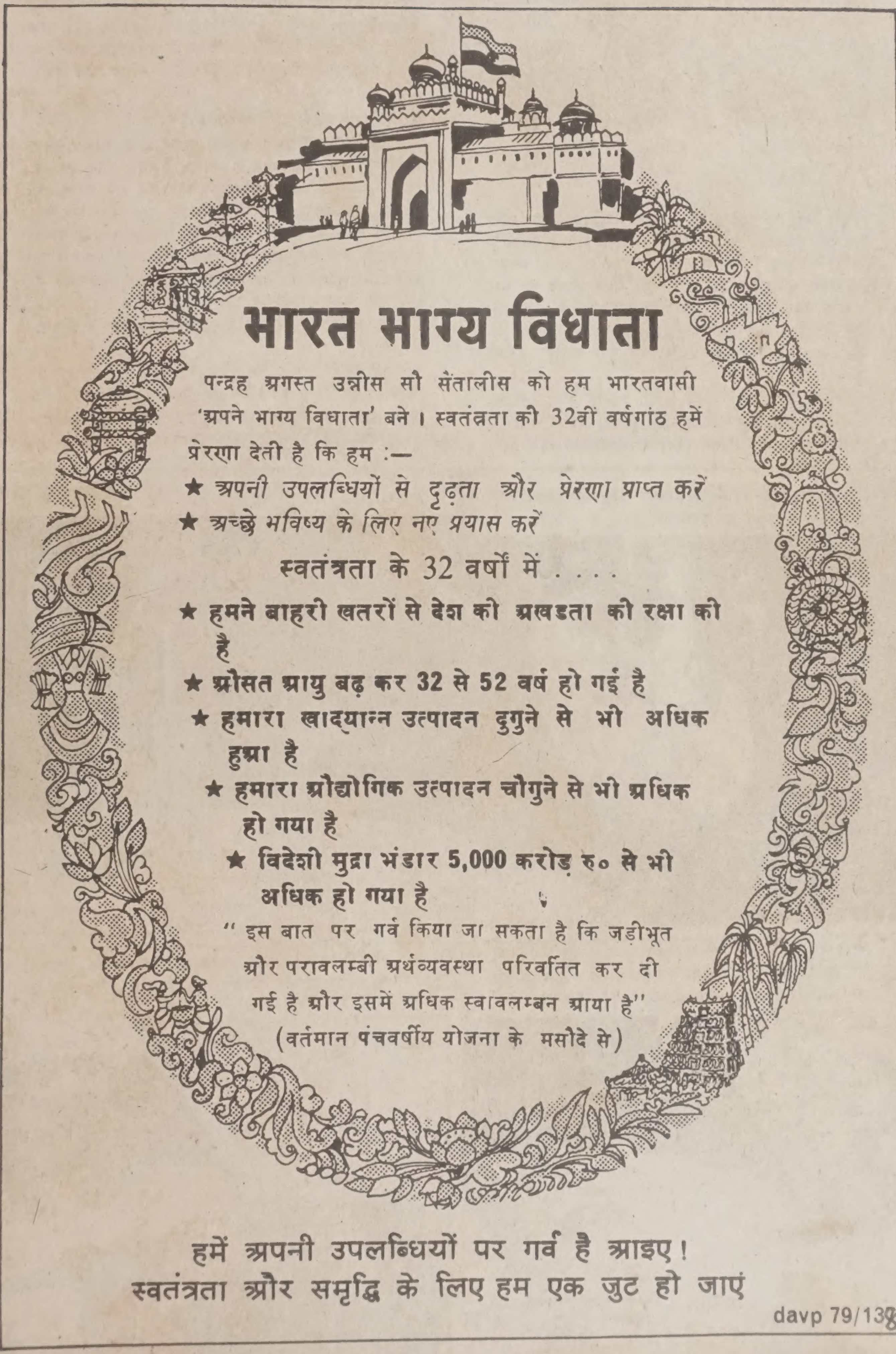
सैयद अतहर हुसैन, बंबई

प्र० : काका जी आपको फिल्मों में काम दिया जाए तो ?

उ० : उम्र तिहत्तर वर्ष की, अब क्या रक्खें आस,
कोई हीरोइन नहीं, डाले हमको घास ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-


भारत भाग्य विधाता
पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस को हम भारतवासी 'अपने भाग्य विधाता' बने। स्वतंत्रता की 32वीं वर्षगांठ हमें प्रेरणा देती है कि हम :—
★ अपनी उपलब्धियों से दृढ़ता और प्रेरणा प्राप्त करें
★ अच्छे भविष्य के लिए नए प्रयास करें
स्वतंत्रता के 32 वर्षों में . . . .
★ हमने बाहरी खतरों से देश की अखंडता की रक्षा की है
★ औसत आयु बढ़ कर 32 से 52 वर्ष हो गई है
★ हमारा खाद्यान्न उत्पादन दुगुने से भी अधिक हुआ है
★ हमारा औद्योगिक उत्पादन चौगुने से भी अधिक हो गया है
★ विदेशी मुद्रा भंडार 5,000 करोड़ रु० से भी अधिक हो गया है
"इस बात पर गर्व किया जा सकता है कि जड़ीभूत और परावलम्बी अर्थव्यवस्था परिवर्तित कर दी गई है और इसमें अधिक स्वावलम्बन आया है"
(वर्तमान पंचवर्षीय योजना के मसौदे से)
हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व है आइए!
स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए हम एक जुट हो जाएं
davp 79/138

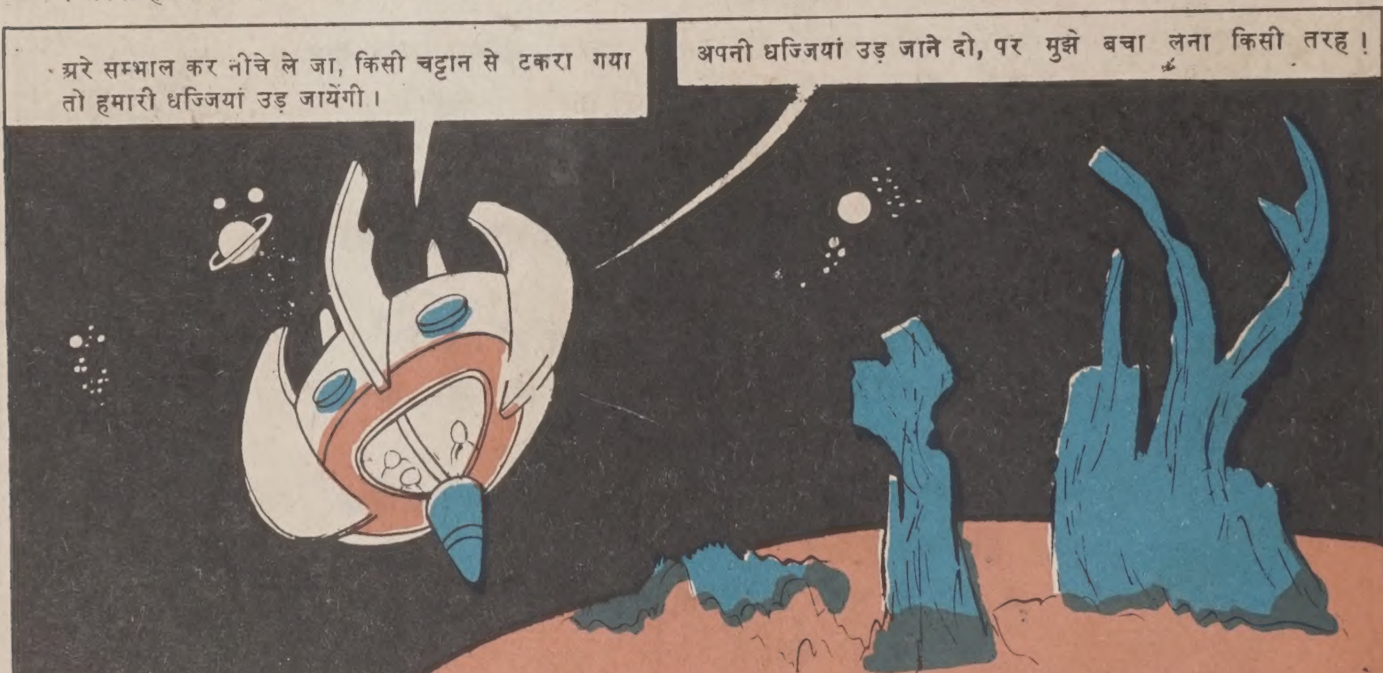
मोटू पतलू

पिछले दिनों एक अंतरिक्षयान धरती पर उतरा था और उस यान में आये हड्डियों के पिंजरों जैसे प्राणियों ने मोटू-पतलू, चेलाराम, घसीटाराम और डाक्टर झटका का अपहरण कर लिया था, अपने अंतरिक्षयान को अपने उपग्रह की ओर ले जाते समय उन हड्डियों के पिंजरों को लूट के इस माल में से चेलाराम अधिक उपयोगी और प्रतिभाशाली लगा था, और उन्होंने उसे अंतरिक्षयान का पूरा कंट्रोल समझा दिया था।

अंतरिक्ष में यात्रा करते समय उनकी मुठभेड किसी दूसरे ग्रह से आये दो भयंकर अंतरिक्षयानों से हुई थी और चेलाराम ने अपनी होशियारी से उन दोनों को मलियामेट कर दिया था, इस कारवाई में अपने यान को कंट्रोल करते समय चेलाराम ने यह पता लगा लिया था कि यान से कोई चीज बाहर अंतरिक्ष में फेंकने वाले केबिन में घुसाया था और एक सुइच दबा था उन्हें केबिन के दरवाजे से बाहर फेंक दिया था।

वे तीनों रोते और दहाड़ें मारते अंतरिक्ष में तैरते रह गये थे, और उनका अन्तरिक्षयान हज़ारों लाखों मील आगे निकल गया था, अब उस यान के मालिक थे, मोटू-पतलू डाक्टर झटका, चेलाराम और घसीटाराम और उस यान का चालक था खरगोश जैसे दांतों वाला चेलाराम, यान सोलर सिस्टम से उर्जा प्राप्त करता था, उसमें कभी समाप्त न होने वाला ईधन था, और मोटू-पतलू ब्रादरी के लिये कभी समाप्त न होने वाला भोजन था, यह सब कलाकार उन खोपड़ियों से बच गये थे, पर उन्हें यह पता नहीं था कि वे कहाँ जा रहे हैं और उनका यान किस ओर अन्तरिक्ष की गहराई में डूबा जा रहा है।

पता नहीं कितने लाख मील की यात्रा करने के बाद उन्हें किसी उपग्रह की धरती नजर आई है और चेलाराम अपने अन्तरिक्षयान को वहां उतार रहा है। इसके बाद आइये, हम आपको लिये चलते हैं, उसी उपग्रह की ओर……








तूने कभी तांगा भी चलाया है, जो अन्तरिक्षयान चलाने की तरकीब बता रहा है ?
वही बात हुई ना ? मैंने कभी अंडा नहीं दिया, पर आमलेट कैसे बनता है क्या मैं यह नहीं जानता ?
यह जगह ठीक नजर आ रही है, यहीं उतार रहा हूं मैं, सीटों पर बैठकर अपनी पेटियां कसकर बांध लो ।
इस समय ज़रा सी भूल से ही उनका अन्तरिक्षयान चूर-चूर हो सकता था । पर चेलाराम ने बड़ी सावधानी से उसे नीचे उतार लिया था ।
नीचे झांक कर देखो अन्तरिक्षयान को कहां उतारा है इस चूहे ने ?
अरे मर गये, बेड़ा गर्क हो गया अपना । पहले मौत नहीं आई थी तो अब आ जाएगी ।
मैं यहां से फिसल कर नीचे गिरा तो मेरे हाथ पांव टूट जाएंगे ।
हाथ पांव को बचा कर क्या उनका अचार डालेगा ? अरे तू सारे का सारा ही टूट जाएगा जनता पार्टी की तरह ।


पाँव जमा-जमा कर इस शिखर से नीचे उतरो !
क्या कहा, पांव घुमा-घुमा कर चन्द्रशेखर को नीचे उतारो ?
भगवान से कहो, आज हम पर तरस खाये ।
भगवान से कहो, देवराज अर्स खाये ? क्या खिला रहे हो देवराज अर्स को, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है ।
तुझे घास खुला रहे हैं बहरे, यहाँ हम सब की जान पर बनी है और यह अपने तारकोल भरे कानों से पता नहीं क्या सुन रहा है ।
मुझे तो भूख लगी है ।
भूख लगी है तो अपने हाथ पांव खा ले, फिर इनके टूटने का काम नहीं रहेगा ।
पांव जमा-जमा कर आगे बढ़ते हुये अब वे बहुत नीचे उतर आये थे, पर अब कहाँ तक नीचे उतरेंगे और कहाँ पहुचेंगे यह कोई नहीं जानता था ।

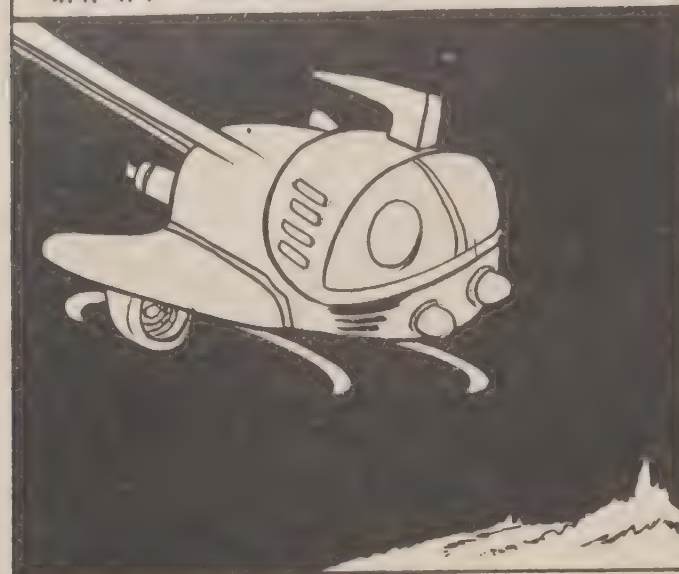


नीचे उतर कर क्या हमने गलती नहीं की ? उस अन्तरिक्ष यान में बैठकर हमें अपनी धरती की ओर जाने का मौका मिला तो हम ऊपर कैसे चढ़ेंगे ?
वह देख सामने क्या मुसीबत है ।
हवा की सड़क पर स्कूटर उड़े जा रहे हैं ।
इसका मतलब है, यहां आब' और यहां के वासियों का विज्ञान हमसे बहुत आगे है ।
यह क्या इतना बड़ा केंचवा है ?
लगता है यहां की रेल है ।
इसके ड्राईवर से पूछ लो, दिल्ली जाने के लिये कितने का टिकट लगेगा ?

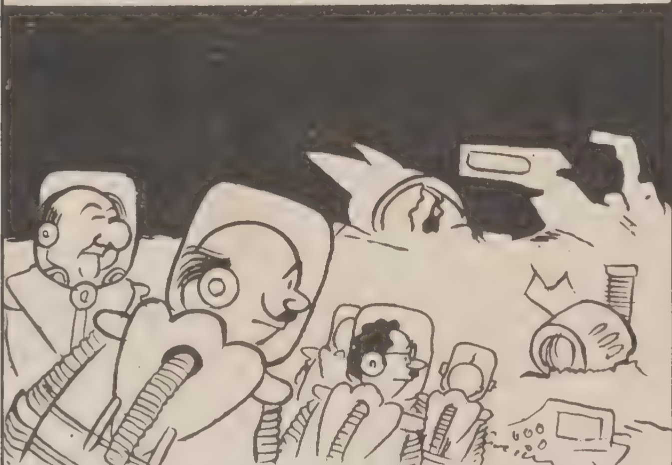

ड्राईवर का नाम लिया, ले ड्राईवर भी आ गया।
कहां आ गया ?
ऊपर गर्दन उठा कर देख।
अरे मेरा बेड़ा गर्क हो गया, यह तो हमें यहां से उठा कर फेंकेगा तो हम सीधे बहादुरशाह ज़फर मार्ग जाकर पड़ेंगे।
कंटू जंटू फरंटू संतू।
कह रहा है, क्या तुम जार्ज फ़र्नांडीस को साथ नहीं लाये।
चरंतू सघंतू लटंतू जलंतू डबंतू।
कह रहा है, चर्णसिंह की लुटिया जल्दी ही डूबेगी।
पता नहीं यह क्या कह रहा है और तू क्या सुन रहा है बहरे, इसके कानों में तो हमारी भाषा का अनुवाद करने वाला कोई यंत्र भी नहीं लगा हुआ है।
पटेमा कर लके का मसा भर भमूने।
अब कह दे, यह कह रहे हैं, पेट में करेले का मसाला भर कर भूनेंगे।
तभी वहां जोरदार गड़गड़ाहट की आवाज हुई
गररर
और उन प्राणियों ने घबरा कर इन सबको छोड़ दिया।
गररररररररररररर


दूसरे ही पल उन्होंने देखा, आकाश से कोई चमकता हुआ गोला नीचे आ रहा था ।
और उस उपग्रह के प्राणियों का झुंड का झुंड डर के मारे चीखता हुआ जैसे अपनी रक्षा के लिये एक ओर भागा जा रहा था ।
तभी वहां गड़गड़ाते हुये टैंक और उनके अजीब हथियार आ गये ।
और उन्होंने आसमान से उतरने वाले आग के गोले से मुकाबला करने के लिये मोर्चा बना लिया ।

आग का गोला जब और नीचे आया तो पता चला कि वह एक अन्तरिक्षयान था, जो शायद किसी दूसरे उपग्रह से आया था।



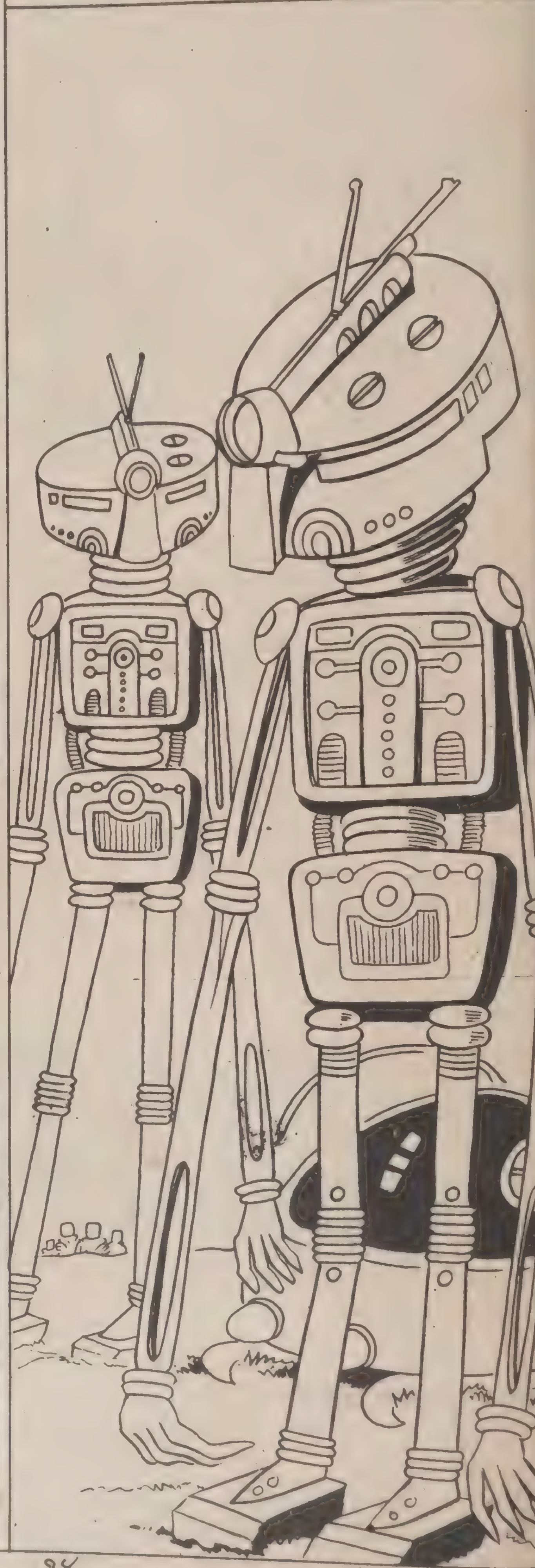
उनके आसपास कितनी ही टूटी-फूटी मशीनें बिखरी पड़ी थीं, उन्हें देखकर यह अनुमान लगाना कठिन न था वे अन्तरिक्षयानों के टूटे-फूटे टुकड़े थे। ऐसा लगता था कि इस उपग्रह और दूसरे उपग्रह वालों में सैंकड़ों साल से युद्ध चला आ रहा था, और आज फिर उनमें जबरदस्त टक्कर होने वाली थी।



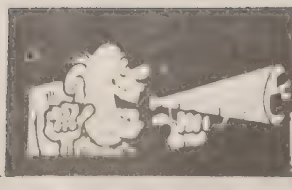
अन्तरिक्षयान नीचे उतरा ही था कि उसके दरवाजे खुले और उसमें से एक मशीनी मानव बाहर निकलने लगा।



और देखते ही देखते, दो विशाल मशीनी मानव निकलकर बाहर खड़े हो गये, उनका शरीर इतना बड़ा था कि कई दर्जन मोटू, पतलू उनकी एक जेब में आ सकते थे।




इस उपग्रह वालों ने तुरंत ही मशीनी मानवों पर गोलाबारी शुरू कर दी।
गोले उनसे टकरा कर चूर-चूर हो गये, उन्होंने उनके लोहे के शरीर पर इतना असर भी नहीं किया, जितना बेर की गुठली कर सकती है, लगता था अब तक की लड़ाई में वे जितनी हानि उठाते रहे थे। अब अपनी वैज्ञानिक क्षमता से उन्होंने उस हानि का बदला लेने की योग्यता पाली थी, मशीनी मानव अपने उपग्रह के वैज्ञानिकों के सिगनल का पालन कर रहे थे, और उनमें लगे कम्पयूटर उन्हें आगे ही आगे बढ़ने का आदेश दे रहे थे।
तभी गड़गड़ाहट की आवाज हुई। मशीनी मानवों की आँखों से तेज, शक्तिशाली और चमकीली किरणें फूटीं
और उन्होंने अपने सामने के टैन्कों को चूर-चूर करना शुरू कर दिया।
इन किरणों की लपेट में अब वह पहाड़ी भी आ गई थी जहां मोटू-पतलू, डा० झटका और चेलाराम अपनी जान बचाये बैठे थे।



आपस की बातें

चचा वातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

मुन्ना बाबू विद्यार्थी—कानपुर : मैं लोगों से आपकी बहुत तारीफ करता हूँ इसके बदले में आप मुझे क्या देंगे ?

उ० : हमारे पास तो केवल भगवान का नाम है देने के लिए। अगर आप हमारे चमचे बन गये हैं तो आप खुद ही सोचिये कि यह चमचा किस कटोरे में से क्या निकाल सकता है ?

हरगुन जसवानी—मंडला : चाचा जी, मूर्ख अपने आपको बुद्धिमान कब समझने लगता है ?

उ० : जब वह बुद्ध मान लिया जाने के योग्य बन जाता हैं।

श्याम सुन्दर, माहेश्वरी,—फारबिसगंज : चाचा जी मनुष्य का दिमाग परेशान कब हो जाता है ?

उ० : आज के हालात में तो यह पूछिए कि परेशान कब नहीं होता।

राजेश देवानी—लश्कर : यदि आप को चांद पर भेजा जाए तो क्या आप जाने को तैयार होंगे ?

उ० : अवश्य, हम तो वहां दीवाना का ब्रांच आफिस बनाने की योजना बना रहे हैं।

परमानन्द छत्रवानी, रायपुर : चाचा जी, कृपया यह बताने का कष्ट करें कि घसीटाराम जी किस नारायण की पूजा करते हैं ?

उ० : न राजनारायण की, न जयप्रकाश नारायण की, न प्रेमा नारायण की।

दीपक शर्मा, शाहजहांपुर : हंसी मजाक का खजाना, सबका प्यारा दीवाना एक ऐसा नशा बन गया है कि चढ़ता ही जाता है। यहां दीवाना के पुलिस लाईन में आते ही छीना झपटी शुरू हो जाती है। हम सब इसकी उन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं।

उ० : पुलिस वालों की तारीफ से भी डर लगता है। हम आशा करते है कि आप कभी दीवाना में कोई कमी पायेंगे तो इसे हवालात में बन्द करने से पहले हमें सूचना अवश्य देंगे।

नवाबगंज, गुड़ीपापा : चाचा जी, आजकल की राजनीति के बारे में आपका क्या विचार है ?

उ० : लड़ रहे हैं रोशनी का लेके नाम।
उस तरफ भी कुछ साये,
इस तरफ भी कुछ साये।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला : आज कल खुश कौन है, नेता या अभिनेता ?

अभी नेता अधिक खुश हैं। पांच-पांच, दस-दस लाख में बिक रहे हैं सुबह शाम।

अभय कुमार 'बेदर्द', बीना : हुस्न को देखकर किसका ईमान डगमगा जाता है ?

उ० : बेईमान का।

खान निगार, वारसी, शाहजहांपुर : सफल नेता बनने का राज क्या है ?

उ० : एक नहीं, इसके दो राज हैं। जो जितनी अधिक मूर्खता करेगा, वह उतना ही बड़ा नेता बन जाएगा। और दूसरा राज यह है, कि जनता जितनी बड़ी मूर्खता करेगी वह किसी को उतना ही बड़ा नेता बना देगी।



एस० एम० आलमगीर, हजारीबाग : डीयर अंकल, दुनिया से बुराईयां कब समाप्त होंगी ?

उ० : जब तक दुनिया में एक भी इंसान मौजूद है, दुनियां से एक भी बुराई समाप्त नहीं हो सकती।

योगेश कुमार, अग्रवाल, डोमापुर : कहाँ छुपे हो चाचाजान। सुना दो एक प्यारा सा गान।।

उ० : इतनी दूर से आपको,
सुनायें कैसे मीठी तान।
कौआ बोले मुंडेर पर,
उसे चचा समझना मेरी जान।।

वेद प्रकाश आर्य, कलकत्ता : चाचा जी, आपके सर पर बाल तो हैं नहीं, फिर आप "बाल वर्ष" कैसे मना रहे हैं ?

उ० : आपको मुसीबतों मे बाल-बाल बच कर।

मुकुन्द मुरारी, सिंहानिया, रघुनाथपुर : आप एक रुपये में हमें हंसाते-हंसाते अधमरा कर देते हैं, तो किसी रोज़ दो रुपये में पूरी तरह ही जान से तो नहीं मार देंगे ?

उ० : जी नहीं, इसीलिये तो हमने अब तक दीवाना का मूल्य दो रुपये करने के प्रश्न पर विचार नहीं किया है।

सुनील पसारी, आसनसोल : क्यों चाचा जी, आपने दीवाना में ऐसा कौन सा रस घोल दिया है कि एक भी दिन दीवाना मिलने में देर हो जाए तो मैं बेचैन हो जाता हूं, है ना यह हैरानगी की बात ?

उ० : हैरानगी की नहीं, दीवानगी की बात है।

सुरेश कुमार बुधवानी, रायपुर : चाचा जी, पत्नी का दिल पति के लिये कब बेचैन होता है ?

उ० : महीने की पहली तारीख को या सात तारीख को।

विजय कुमार मशानी, रायपुर : किसी से इश्क हो जाये तो क्या करना चाहिये ?

उ० : ऐसी जगह जाकर रहना चाहिये जो अस्पताल के पास हो और पुलिस स्टेशन मे दूर हो।

दिलीप गोवर्धन, बिलासपुर : मनुष्य अपने आपसे घृणा कब करने लगता है ?

उ० : शायद कभी भी नहीं, मोरार जी देसाई आज भी जैसी बातें कर रहे हैं उनसे तो यही सिद्ध होता है।

योगेश संघवी जैन, बेरमो : आप अपने प्रेम-पत्र का नाम खत, प्रेम लैटर, या प्रेम चिट्ठी रख लें तो कैसा रहेगा ?

उ० : अच्छा रहेगा, सब के सब नाम लाजवाब हैं।

वध्या सिंह 'निराला', पनागर : चाचाजी, जिनके बच्चे हैं वे भी दुखी हैं और जिनके बच्चे नहीं वे भी दुखी हैं, इसमें दोष किसका है ?

उ० : ऊपर वाले का, जिसके किए धरे ने इन्दिरा गाँधी को गद्दी से उतार दिया। अब उसे उतारिये ना किसी तरह।

मोहन चन्द्र पाठक, पिथौरागढ़ : चाचाजी, आंटी की चप्पल का साईज क्या है ?

उ० : साईज कोई सा भी हो, इससे क्या अन्तर पड़ता है ? यह पूछिये, चप्पल की ऐड़ी में कितनी जान है ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


देश की राजनीतिक
उथल पुथल
का हमारे क्रिकेटरों पर प्रभाव क्या कहते हैं ये....
बिशन बेदी
अकाली दल ने तटस्थ रहने का फैसला किया है। मैं तब तक बालिंग नहीं करूंगा, गर्दन की मोच का बहाना करूंगा, जब तक असली दल अन्तिम निर्णय न ले-ले।
कपिल देव
हरियाणा की सरकार टिकाऊ नहीं होती, मेरी बैटिंग भी ऐसी ही रहेगी कि अब आऊट हुआ अब आऊट हुआ।
चंद्रशेखर
जब तक इन्दिरा गांधी दोबारा सत्ता में नहीं आयेंगी मेरी बालिंग भी विकेटें नहीं लेंगी।
वैंकट राघवन
अन्ना डी.एम.के. ने तटस्थ रहने का फैसला किया है मैं भी तटस्थ बॉलिंग करूंगा और विकेट लेने की कोशिश नहीं करूंगा।
गायकवाड
मैं पिच पर उतने ही मिनट टिकूंगा जितने दिन चौधरी चरण सिंह की सरकार चलेगी।
चौधरी चेतन प्रकाश सिंह चौहान
जब तक ब्रह्मप्रकाश चौधरी प्रधान मन्त्री नहीं बनेंगे मैं सैंचुरी नहीं बनाऊंगा।

भूत ने टाँग पकड़ी

मिट्ठू मियां जी की भूत का नाम सुनते ही जान निकलती थी। वे भूत से इतना डरते थे कि यदि मक्खी भी उनके कान में भिनभिना जाये तो वे समझते थे कि भूत आ गया। कभी भी पेड़ के नीचे नहीं बैठते थे। कभी घर से बाहर नहीं निकलते थे। रात को तो उन्हें हर आदमी भूत ही दिखाई देता था।

इतना डरने के बावजूद भी वे गली वालों से इतनी डींग हांकते थे कि बस कुछ पूछो ही ना। कहते थे कोई भूत वूत नहीं होता। यदि वह होता तो दिखाई न देता। "मैं भूत-वूत में बिलकुल विश्वास नहीं करता हूं।" भूत से बिलकुल डरना नही चाहिए।

एक बार क्या हुआ मिट्ठू जी आंगन में सो रहे थे तो ऊपर से किसी पक्षी ने बीट कर दी, वो उनके माथे पर आ गिरी। उन्होंने सुन रखा था कि भूत अक्सर माथे पर ही चिपका करते हैं। सो वे भूत-भूत, बचाओ ! बचाओ ! चिल्लाते हुए गली की ओर भागे। पूरी गली में शोर मचा दिया। सभी लोग लाठियां लेकर बाहर निकले तो मिट्ठू जी से पूछा, 'कहां है भूत' उन्होंने अपने माथे की ओर इशारा किया।

लोगों ने बत्ती जला कर देखा तो माथे पर चिड़िया की बीट पड़ी देखी, तो लोगों की हंसी ही न बन्द हुई। पर अभी मिट्ठू जी बहुत ही डरे हुए थे और उनको रात को नींद न आई और इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि मिट्ठू जी कितने डरपोक थे।

सुबह हुई तो मिट्ठू जी फिर हवाई किले बनाने लगे कि "मैं तो भूत-वूत से बिलकुल भी नहीं डरता।" तुमने मुझे किस मर्ज की दवा समझ रखा है। लोग उनकी हरकत से बहुत ही परेशान थे उन्होंने मिट्ठू जी की बोलती बन्द करने के लिए तरकीब सोच रखी थी। अतः उनमें से पांडे जी बोले, 'मियां' जी आप भूत से बिलकुल नहीं डरते हैं न'। वे बोले, "बिलकुल नहीं," भूत होता ही नहीं तो डर किस बात का। शर्मा जी, "शर्मा जी, आप रात को शमशान जा सकते हो?"

"आपको कल रात को शमशान में खूंटी गाड़ कर आनी होगी।" मिट्ठू जी बोले—'यह भी कोई मुश्किल काम है।"

अब तो मिट्ठू जी की हालत देखते ही बनती थी। शमशान जाकर खूंटी गाड़ना



यह तो मिट्ठू जी के लिए नाकों चने चबाने का काम था। वे एक कौने में दुबक कर बैठ गए और उन्हें उल्टी आने लगी, क्योंकि ये तो उनकी इज्जत का प्रश्न था। मिट्ठू जी की जान पर बनी हुई थी और गली वाले मन ही मन प्रसन्न थे।

अब वह समय भी आ गया जब रात को मिट्ठू जी खूंटी और कुल्हाड़ी लेकर घर से निकल कर चल पड़े। दिल की धड़कन बहुत तेज चल रही थी। उन्हें तो राह में ही इतना डर लग रहा था तो शमशान में क्या हालत होगी ? जितना शमशान पास आता जाता था मिट्ठू जी की धड़कनें तेज होती जाती थीं, तभी एक पत्थर से लड़खड़ा कर गिर गये और चिल्लाये······बचाओ ! बचाओ ! भू···त। वहां से होकर आगे गए तो हवा के कारण पेड़ हिल रहे थे, मिट्ठू जी ने सोचा भूत हिला रहे हैं जब उन्होंने देखा कि जुगनू लाइट दे रहे हैं तो उन्हें पूरा विश्वास हो गया। यहां भूतों का बास है। जो लाइट मार रहे हैं।

अब तो अवश्य ही भूत उन्हें मार डालेंगे ऐसा सोचकर वे अधमरे होकर गिर पड़े। आधे घंटे बाद होश आया तो वहीं पर खूंटी गाड़ने लगे। अभी थोड़ी सी गड़ी थी कि ऊपर से छोटी सी टहनी गिरी और साथ ही रात्रिध्वनि भी उनके कानों में पड़ी तो मिट्ठू मियां जी के पसीने छूटने लगे भूत-भूत चिल्लाते हुए भागे पर उनसे भागा ही न गया उनकी टांग भूत ने पकड़ ली, और वे वहीं पर बेहोश होकर गिर गये।

सुबह हुई तो गली वाले उनके पास आये तो देखा कि मिट्ठू जी बेहोश पड़े हैं और साथ ही खूंटी गड़ी है जिसमें उनकी पैन्ट फँसी हुई है। शर्मा जी को सारी बात समझ में आ गई और मिट्ठू जी को होश लाकर बोले—क्यों कैसे पकड़ी थी भूत ने टांग। मिट्ठू जी शर्म से पानी-पानी होकर सिर नीचा करके चल दिए।

इस घटना के पश्चात आज तक फिर कभी उन्होंने डींग नहीं मारी और न ही भूतों की बात की।

—शिवकुमार भल्ला,

क्षणिकाएं

मध्यावधि के नाम पर···।
नेता
चुनाव का नाम न लेता
जानता है
चिकनी चुपड़ी बातों से
कोई वोट न देता
मंत्री की बढ़ी तोंद देख
वोटर भी है चेता
मरीयल से थे आयाराम
गयाराम बना सबका चहेता
मंत्रीपद भले न मिला
लाखों बना वह लेता
मध्यावधि का नाम जो सुना
हुए बेहोश
बिखर गई ज्यों बोरे की रेता
याद आ गया तभी भूला हुआ वह
गांव पगडन्डी
और किसान का खेता···।

चुन्नीलाल सलूजा

फैण्टम — जंगल शहर



डाक्टर कहते हैं कि आप जल्दी ही ठीक हो जायेंगे।
मेरा बैज ले गये।
फिक्र मत करो, मैं उसे ढूंढ़ लूंगा।
बेचारे अंकल डेव ! उन्हें "बिल्कुल ठीक" होने में काफी समय लगेगा ?
तुम तो कह रहे थे कि तुम बैज ढूंढ़ दोगे।
मगर, तुम तो जंगल वापस जा रहे हो।
नहीं, पहले मैं उन बदमाशों से इस जंगल में बैज वापस लूंगा !
ये सब लोग पुलिस से बात करने में घबराते हैं।
शायद मुझसे बात कर लें !
एक आदमी पर कल हमला हुआ था...।
तुम में से कुछ यहां थे। क्या तुम उन बदमाशों का हुलिया बता सकते हो ?
मुझे नहीं पता।
नहीं।
पुलिस मैन ठीक कह रहा था, सब घबराते हैं।
कुछ पता नहीं...
देखा नहीं...।
पुलिस कमिश्नर
अभी तक पता नहीं चला, शायद पहचानने में न आये।
अरे ! इसने डेव का बिल्ला पहना है। अकड़ में शायद कुछ बता दे।
शायद रात को कुछ बेहतर रहेगा
जब वह अंकल डेव पर हमला करने वालों को ढूंढ़ रहा है...।
श्रीमान यहाँ पर रात को न घूमिये, खतरा है।
अरे ! मैंने देखा नहीं आपके साथ कुत्ता है आपको कोई तंग न करेगा।
बहुत खतरनाक हैं।
मैंने तो यह सोचा ही नहीं डेविल।
तुमसे तो सब बदमाश डर जायेंगे, तुम्हें घर छोड़ना पड़ेगा।



दीवाना

वर्ग पहेली

10 रुपये पुरस्कार जीतिये

भेजने की अन्तिम तारीख: ८ सितम्बर ७६

1		2	3	4
	■	5		
6	7	■	8	
9		10	■	
■	11			

संकेत

बायें से दायें

१. अभिनेत्री जिसके बीच एक और रिश्तेदार मौजूद है ? (२-३)

५. खाते समय मक्खन लगाने वाली। (३)

६. पुरानी दवा बनाने वाली उल्टी कम्पनी ? (२)

८. हिन्दी में किसी तरह भी शुरू में मिलने वाला विदेशी सिक्का । (२)

९. धन की मात्रा जिसमें बाद में कसर रह गयी ? (३)

११. हंसराज में क्या जोड़ने पर लेखक बनेगा ? (४)

ऊपर से नीचे

१. एक चित्रकार जिसके बाद में शराब का काउंटर है ! (४)

२. प्रभाकर के बाद में वे नहीं हैं लेखक । (२)

३. शहद जैसे मीठे राजनीतिक नेता का उपनाम । (३)

४. नरनी चीज से निगाहें झुकवाइये । (२-३)

७. सुई धागे के काम से बनी एक जगह ? (३)

१०. मान के आगे क्या हो तो आवभगत होगी ? (२)

कार्टून बनाइये प्रतियोगिता

इनाम ५ रु०

आप निम्न चुटकुले पर हमें व्यंग्य चित्र बना कर भेजें । सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य चित्र को पुरस्कार—

क्रिकेट के मैदान में एक कुत्ता सुनील गावस्कर से, 'पैकर सीरीज में खेल के बीच मैदान में दौड़ कर बाधा डालने के लिये मैं भी पैकर से अनुबंध पाने की आशा में हूं । मैंने कई टैस्ट मैचों में बाधा डाली है ।'

अन्तिम तिथि: ८ सितम्बर १९७९

● एक व्यक्ति— 'डाक्टर साहब ने मुझे नया जीवन दिया है ।"

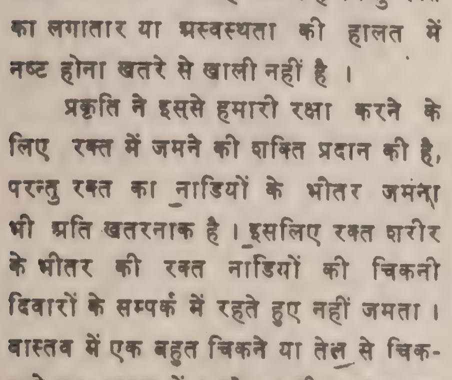
दूसरा— 'तभी तुम्हें पिछले वर्ष मुझ से लिए सौ रुपये याद नहीं हैं। वह पिछले जन्म की बात हो गयी ।"

क्यों और कैसे

प्र० : रक्त के जमने से क्या लाभ है तथा ये किस तत्व की सहायता से जमता है ? —एच. एम. आलमगीर, हजारीबाग ।

उ० : रक्त हमारे शरीर के लिए अति आवश्यक है तथा इस का नष्ट होना हम सहन नहीं कर सकते । ये ठीक है कि स्वस्थ मनुष्य शरीर के एक तिहाई रक्त के नष्ट हो जाने पर भी जीवित रह सकता है परन्तु रक्त का लगातार या अस्वस्थता की हालत में नष्ट होना खतरे से खाली नहीं है ।

प्रकृति ने इससे हमारी रक्षा करने के लिए रक्त में जमने की शक्ति प्रदान की है, परन्तु रक्त का नाड़ियों के भीतर जमना भी अति खतरनाक है । इसलिए रक्त शरीर के भीतर की रक्त नाड़ियों की चिकनी दिवारों के सम्पर्क में रहते हुए नहीं जमता । वास्तव में एक बहुत चिकने या तेल से चिकनाये हुए बरतन में रखने पर भी रक्त जमता नहीं । रक्त में कांच की नली डुबाने पर उस पर लगा रक्त भी नहीं जमता, अपितु लकड़ी की खुरदरी डंडी डुबाते ही रक्त जमना आरम्भ हो जाता है । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि रक्त खुरदरी सतह अथवा रक्त नाड़ियों पर चोट इत्यादि लगने से ही जमना आरम्भ



होता है । ऐसी अवस्था में सबसे पहले धागे के समान बारीक 'फाइबरीन' नामक तत्व रक्त में उत्पन्न हो जाता है । इस तत्व के धागे से चारों ओर को बढ़ कर एक जाल सा बना लेते हैं और रक्त के सारे अणुओं को मकड़ी के जाले में मक्खी के समान फंसा लेते हैं । इस प्रकार रक्त की धारा रुक जाती है और इस स्थान पर रक्त की दलदल सी बन जाती है । फाईबरीन के अणु बहुत मजबूत तथा लचीले होते हैं, ये रक्त अणुओं को एक क्लोट में इकट्ठा कर लेते हैं।ये रक्त का क्लोट सोखने वाली रुई के एक टुकड़े के समान है जो रक्त को नष्ट होनेसे बचाने के लिएप्रकृति द्वारा प्रदान किया गया है ।

सबका रक्त भिन्न-भिन्न गति से जमता है।कुछ व्यक्तियों का रक्त धीरे जमता है या जम ही नहीं पाता इसे 'हिमोफीलिया' कहते हैं।ये रोग एक विचित्र रोग है,इसका एक से दूसरे को दिया जाना बिल्कुल भिन्न है । ये रोग केवल पुरुषों को होता है, परन्तु कभी बाप से बेटे को ये रोग विरासत में नहीं दिया जाता अपितु पिता से पुत्री में जाता है, जो स्वयं स्वस्थ रहती है परन्तु अपने पुत्र को ये रोग दे देती है।इस प्रकार रोगी पुरुष के बेटे के बजाये पोते को ये रोग प्राप्त होता है। और वो इस रोग की गिरफ्त में आ जाता है ।

इस का एक प्रसिद्ध उदाहरण इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया से सम्बन्धित है । रानी और इनके पति अपने पूर्वजों से ये रोग ग्रहण कर चुके थे,इसके फलस्वरूप इनके छः पोते पोती इस रोग से ग्रस्त हुए इनमें एक स्पेन के राजकुंवर और एक अन्तिम रूसी 'जार' के पुत्र भी थे ।

प्र० : 'रानी मक्खी' को रानी क्या विशेष कारण बनाता है ?

उ० : रानी बनने के लिये 'रानी मक्खी' को बस्ती की आवश्यकता होती है । हर प्रकार की मधु मक्खी बस्ती में नहीं रहती । एक प्रकार की मक्खियां तो 'अकेली मक्खी' ही कहलाती हैं क्योंकि ये बस्ती में नहीं रहती । इन अकेली मक्खियों में केवल दो प्रकार की मक्खी ही होती हैं, एक नर दूसरी अंडे देने वाली मादा मक्खी । बस्तियों में एक तीसरे प्रकार की मक्खी भी रहती हैं । ये मजदूर मक्खी होती हैं जो कि प्रायः अण्डे नहीं देतीं । इस प्रकार मधु मक्खियों की बस्ती में नर मजदूर, तथा सारी बस्ती की मां रानी मक्खी पाई जाती हैं ।

मधु मक्खियों की रानी के जीवन को देखते हैं कि ये अपना जीवन कैसे व्यतीत करती हैं और रानी मां कैसे बनती हैं । शीत ऋतु में रेतीले तट या और किसी उपयुक्त स्थान पर छेद बनाकर सर्दी बिताती हैं। बस्ती की केवल ये ही मधु मक्खी शीत ऋतु में जीवित रह पाती हैं । बसन्त ऋतु आते हो ये बस्ती बनाने का काम आरम्भ कर देती हैं ।

सबसे पहले ये बस्ती के घर की खोज करती हैं जैसे चूहों द्वारा छोड़ा गया बिल इत्यादि । इस बिल की पोली की हुई मिट्टी इत्यादि को एक ओर करके उसके नीचे नवजात शिशुओं की नर्सरी के लिये स्थान बनाती हैं । फिर ये फूलों से रस तथा पराग एकत्रित करने में जुट जाती हैं और इस सूखे गड्ढे में स्वयं बनाई हुई मधु मक्खी की रोटी रखती हैं । फिर इस पर कुछ अंडे देती हैं और उन्हें मोम से ढक देती हैं । और इन अंडों पर बैठ कर अपने शरीर से इन्हें ठंडी हवा से बचा कर गरम रखती हैं ।

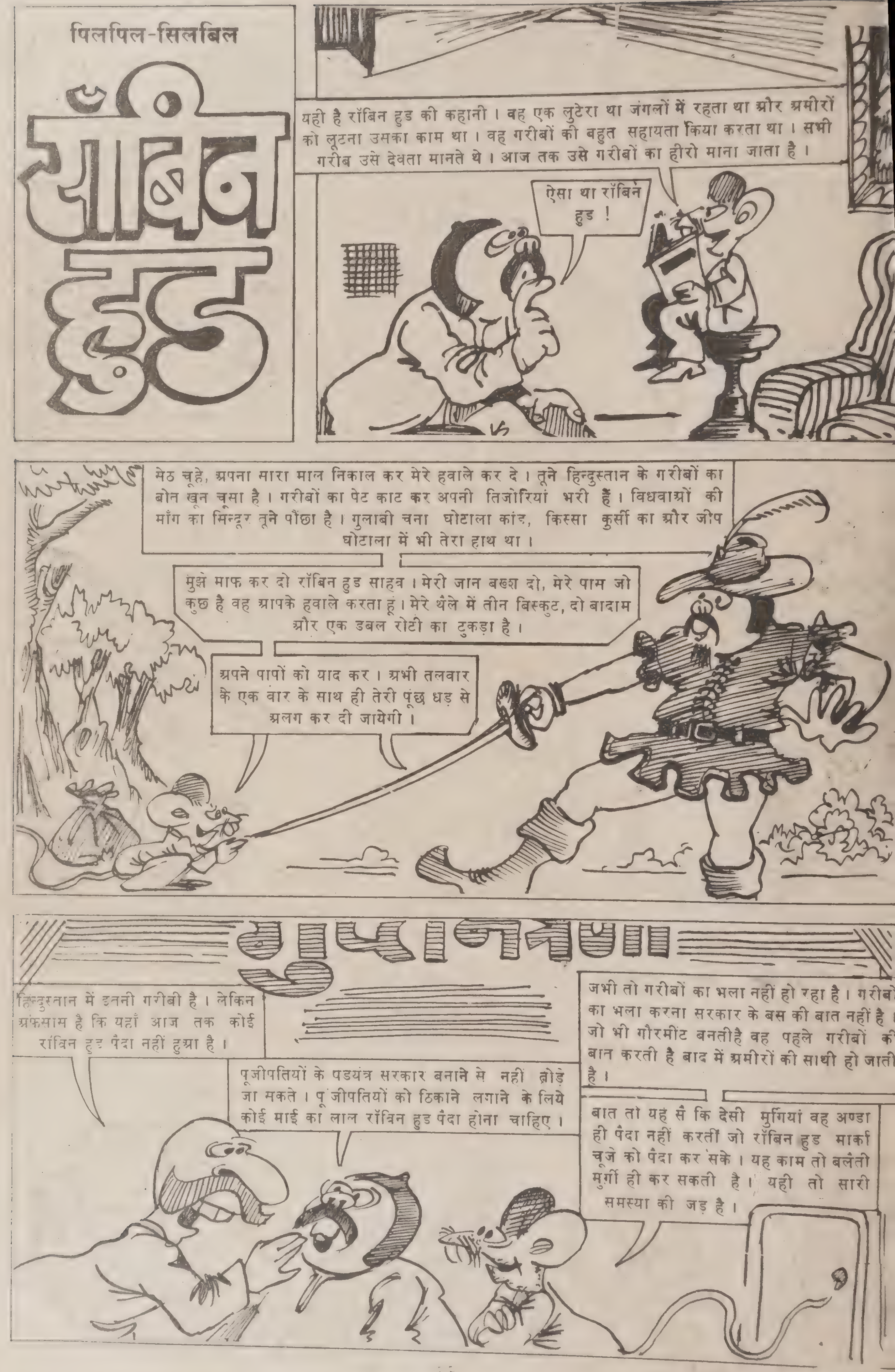
अपने पास इसने मोम की एक बड़ी कोठरी बना ली होती है, इसे 'शहद का घड़ा' कहते हैं । इस कोठरी में इस मक्खी ने अंडों से बच्चे निकलने तक बैठे रहने के लिए अपने लिये पर्याप्त भोजन एकत्रित कर लिया होता है । जैसे ही इस मक्खी के सबसे पहले बच्चे उड़ने योग्य होते हैं ये अपनी मां का अधिकतर कार्य सम्भाल लेते हैं । ये मोम बनाते हैं, मक्खी की रोटी बनाते हैं तथा बुरे मौसम में प्रयोग करने के लिये 'शहद के घड़े' को भरे रखते हैं । मौसम के आरम्भ में केवल मजदूर मक्खियां ही पैदा होती हैं, परन्तु गर्मी समाप्त होने से पहले छोटी रानी मक्खियाँ तथा नर भी काफी संख्या में पैदा हो जाते हैं । समाप्ती पर बस्ती टूट जाती है । सारी गर्मी 'रानी' अण्डे देने का प्रमुख कार्य ही करती है ।

मधु मक्खियों में केवल 'रानी' ही अंडे देती है । वो एक दिन में लगभग १५०० या पूरे मौसम में २५०,००० अण्डे तक देती है। ये बस्ती की आवश्यकता के अनुसार जनन क्षमता वाले अण्डे भी देती है, जो मजदूर या रानी बनते हैं, जनन-क्षमता न रखने वाले अण्डे केवल नर मक्खी बनते हैं ।

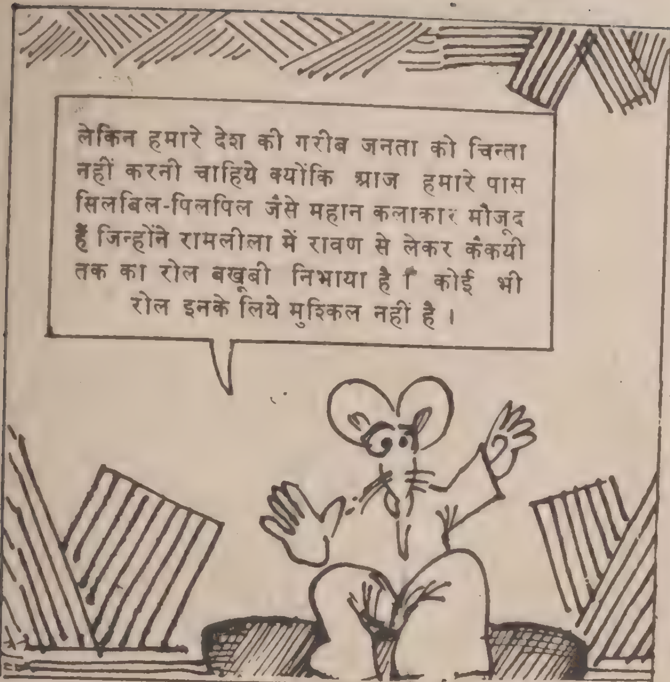


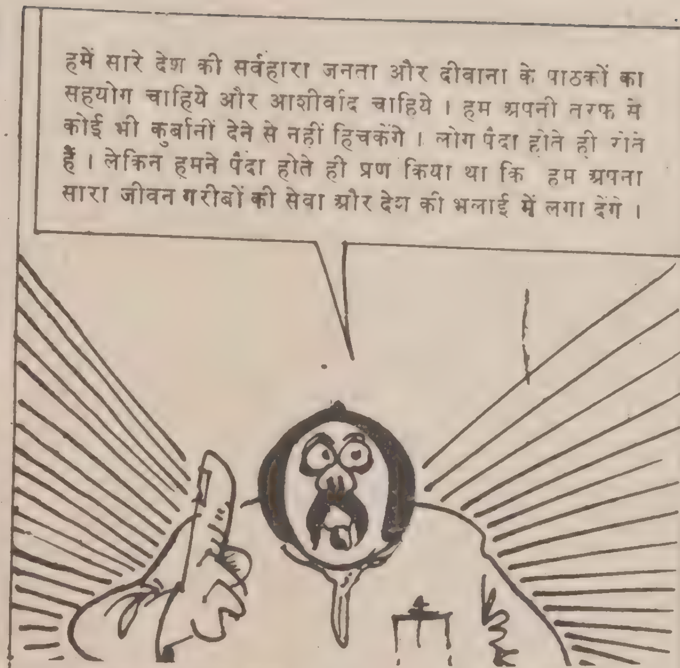
'रानी मक्खी' बनने वाले बच्चे विशेष रानी के कमरे में पलते हैं, उनके जन्म होने पर 'रानी मां' आधी मजदूर मक्खियों को लेकर दूसरी बस्ती बसाने के लिये उड़ जाती है । इनमें सबसे पहले पैदा होनेवाली 'रानी' अपनी बहन रानियों को खाकर बस्ती की 'नई रानी' बन जाती है ।

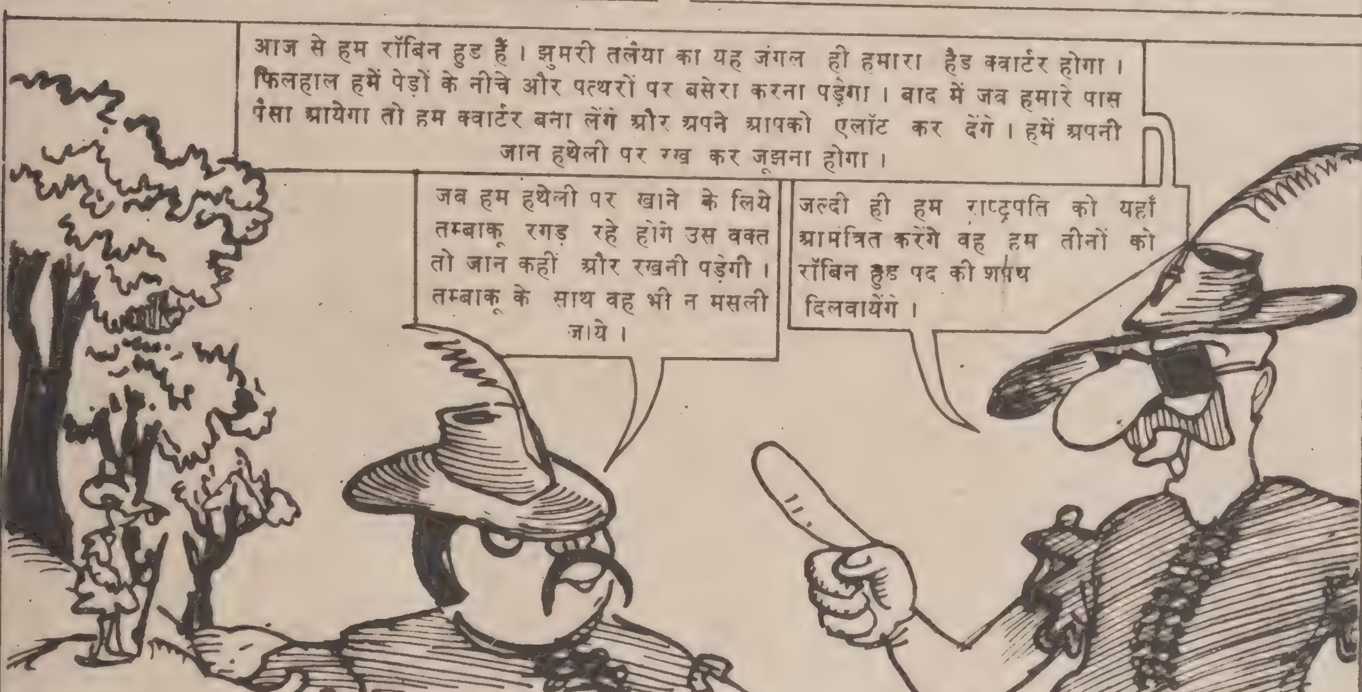
क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

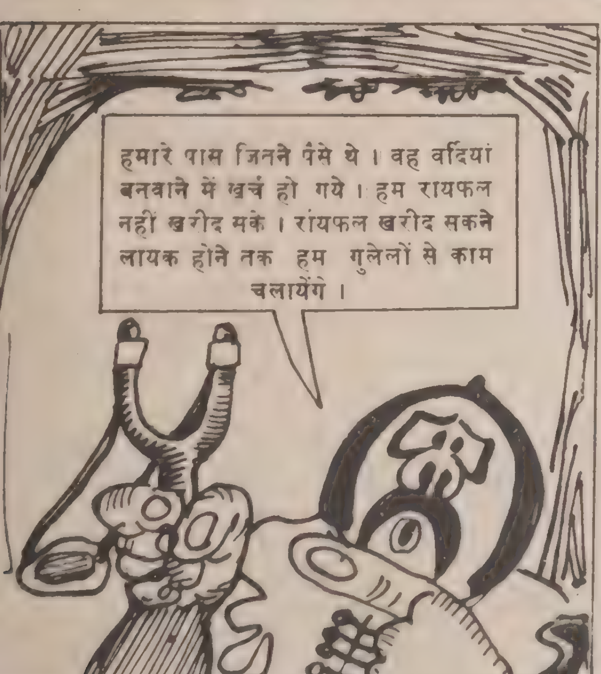


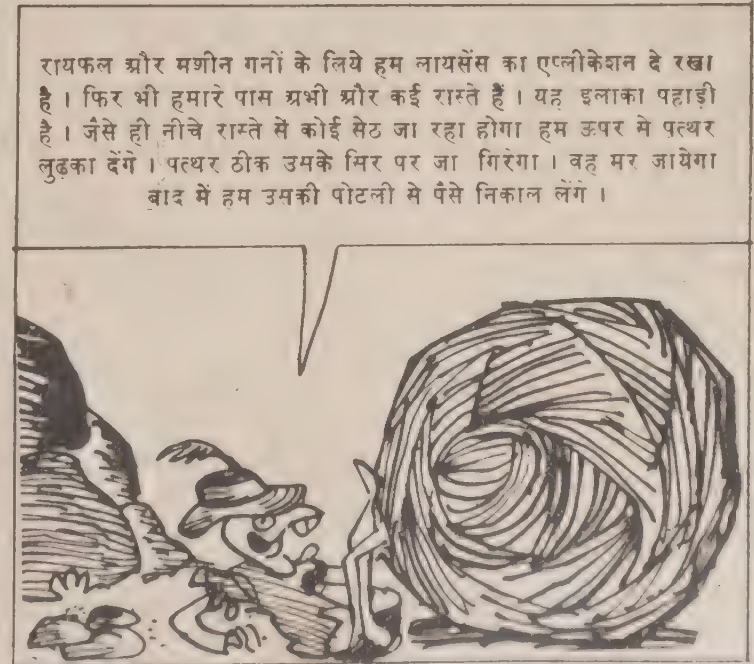
पिलपिल-सिलबिल
रॉबिन हुड
यही है रॉबिन हुड की कहानी । वह एक लुटेरा था जंगलों में रहता था और अमीरों को लूटना उसका काम था । वह गरीबों की बहुत सहायता किया करता था । सभी गरीब उसे देवता मानते थे । आज तक उसे गरीबों का हीरो माना जाता है ।
ऐसा था रॉबिन हुड !
मेठ चूहे, अपना मारा माल निकाल कर मेरे हवाले कर दे । तूने हिन्दुस्तान के गरीबों का बोन खून चूसा है । गरीबों का पेट काट कर अपनी तिजोरियां भरी हैं । विधवाओं की माँग का सिन्दूर तूने पौंछा है । गुलाबी चना घोटाला कांड, किस्सा कुर्सी का और जीप घोटाला में भी तेरा हाथ था ।
मुझे माफ कर दो रॉबिन हुड साहब । मेरी जान बख्श दो, मेरे पास जो कुछ है वह आपके हवाले करता हूं । मेरे थैले में तीन बिस्कुट, दो बादाम और एक डबल रोटी का टुकड़ा है ।
अपने पापों को याद कर । अभी तलवार के एक वार के साथ ही तेरी पूंछ धड़ से अलग कर दी जायेगी ।
हिन्दुस्तान में इतनी गरीबी है । लेकिन अफसोस है कि यहाँ आज तक कोई रॉबिन हुड पैदा नहीं हुआ है ।
पूंजीपतियों के षडयंत्र सरकार बनाने से नहीं तोड़े जा सकते । पूंजीपतियों को ठिकाने लगाने के लिये कोई माई का लाल रॉबिन हुड पैदा होना चाहिए ।
जभी तो गरीबों का भला नहीं हो रहा है । गरीबों का भला करना सरकार के बस की बात नहीं है । जो भी गौरमींट बनतीहै वह पहले गरीबों की बात करती है बाद में अमीरों की साथी हो जाती है ।
बात तो यह है कि देसी मुर्गियां वह अण्डा ही पैदा नहीं करतीं जो रॉबिन हुड मार्का चूजे को पैदा कर सके । यह काम तो बलैती मुर्गी ही कर सकती है । यही तो सारी समस्या की जड़ है ।


लेकिन हमारे देश की गरीब जनता को चिन्ता नहीं करनी चाहिये क्योंकि ग्राज हमारे पास सिलबिल-पिलपिल जैसे महान कलाकार मौजूद हैं जिन्होंने रामलीला में रावण से लेकर कैकयी तक का रोल बखूबी निभाया है ! कोई भी रोल इनके लिये मुश्किल नहीं है ।


हमें सारे देश की सर्वहारा जनता और दीवाना के पाठकों का सहयोग चाहिये और आशीर्वाद चाहिये । हम ग्रपनी तरफ से कोई भी कुर्बानी देने से नहीं हिचकेंगे । लोग पैदा होते ही रोते हैं । लेकिन हमने पैदा होते ही प्रण किया था कि हम ग्रपना सारा जीवन गरीबों की सेवा ग्रौर देश की भलाई में लगा देंगे ।


आज से हम रॉबिन हुड हैं । झुमरी तलैया का यह जंगल ही हमारा हैड क्वार्टर होगा । फिलहाल हमें पेड़ों के नीचे और पत्थरों पर बसेरा करना पड़ेगा । बाद में जब हमारे पास पैसा ग्रायेगा तो हम क्वार्टर बना लेंगे ग्रौर ग्रपने ग्रापको एलॉट कर देंगे । हमें ग्रपनी जान हथेली पर रख कर जूझना होगा ।
जब हम हथेली पर खाने के लिये तम्बाकू रगड़ रहे होंगे उस वक्त तो जान कहीं ग्रौर रखनी पड़ेगी । तम्बाकू के साथ वह भी न मसली जाये ।
जल्दी ही हम राष्ट्रपति को यहाँ ग्रामंत्रित करेंगे वह हम तीनों को रॉबिन हुड पद की शपथ दिलवायेंगे ।


हमारे पास जितने पैसे थे । वह वर्दियां बनवाने में खर्च हो गये । हम रायफल नहीं खरीद सके । रायफल खरीद सकने लायक होने तक हम गुलेलों से काम चलायेंगे ।


रायफल ग्रौर मशीन गनों के लिये हम लायसेंस का एप्लीकेशन दे रखा है । फिर भी हमारे पास ग्रभी ग्रौर कई रास्ते हैं । यह इलाका पहाड़ी है । जैसे ही नीचे रास्ते से कोई सेठ जा रहा होगा हम ऊपर से पत्थर लुढ़का देंगे । पत्थर ठीक उसके सिर पर जा गिरेगा । वह मर जायेगा बाद में हम उसकी पोटली से पैसे निकाल लेंगे ।


भाइयों, बहनों श्रौर देश वासियों तथा बच्चों, श्राज से हमने श्रपना रॉबिन हुड का पदभार सम्भाल लिया है । हमारे ऊपर बहुत भारी जिम्मेवारी आ गयी है । श्राज से भारत में कोई गरीब भूखा नहीं रहेगा । कोई बहन दहेज न होने के कारण कुंश्रारी नहीं रहेगी । कोई छात्र फीस न होने के कारण दुखी नहीं होने पायेगा । विधवा श्रौर बेसहारा माताश्रों के लिये पेंशन का इन्तजाम करना है । बेरोजगारों को हम सिगरेट बीड़ी श्रौर फिल्में देखने के लिये पैसे देंगे ।
सम्पूर्ण क्रांति श्राने ही वाली है ।
हम श्रमीरों के दुश्मन होंगे । जब भी मौका मिलेगा हम उनको लूटेंगे । श्रमीर लोग हमारे नाम को सुन कर ही थर-थर काँपने लगेंगे । हम उनके लिये साक्षात यमदूत साबित होंगे । जब हमारी खूंखार तस्वीर उनकी श्राँखों के सामने श्रायेगी तो उनकी बोलती बन्द हो जायेगी । ब्लैकिये लालाश्रों की धोती खुल जायेगी श्रौर हवा में उड़ जायेगी । बड़े जमींदारों की पगड़ी हिलने लग जायेगी । स्मगलरों को मलेरिया का सा बुखार चढ़ जायेगा । पूंजीपति श्रपनी कोठियों में बैठे-बैठे श्रधमरे से हो जायेंगे । रिश्वत खोर लोगों को दस्त लग जायेंगे । भ्रष्टाचारी नेताओं की टोपी के नीचे के बाल खड़े हो जायेंगे ।
लेकिन सुनो, यह सब करने से पहले हमें श्रपने गैंग का नाम करण करना चाहिये, हम गरीबों में जो नोट बाँटेंगे उन नोटों पर हमारे नाम की मोहर लगी होगी । तभी तो जनता में प्रचार होगा । बगैर नाम का गैंग ऐसे ही है जैसे बगैर मेंहदी के दुल्हिन ।
RH3
हम श्रपने गैंग का नाम श्रार० एच० ३ रखेंगे । श्रार० एच० से रॉबिन हुड बनेगा और ३ का मतलब होगा हम तीन जने ।
नहीं, नहीं, यह नहीं चलेगा । श्रार० एच० ३ से लोग यह समझेंगे कि यह कोई कैमिकल फार्मूला है । श्रौर हम लोग कोई कैमिकल बनाने वाली कम्पनी के एजेंट हैं ।



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

खेल खेल में

पाकिस्तान-आस्ट्रेलिया १९७९ श्रृंखला

(तीन टैस्ट) एक-एक टैस्ट दोनों देशों ने जीता (तीसरा अनिर्णीत)

टैस्ट क्रिकेट औसत आंकड़े

आंकड़े

आस्ट्रेलिया—बैटिंग

	टैस्ट	इंनिग	नं०	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	कैच	औसत
ए. आर. बोर्डर	२	४	१	२७६	१०५	१	२	१	९२.००
डब्ल्यू. एम. डार्लिंग	१	२	—	१५४	७९	—	२	—	७७.००
जे. के. मॉस	१	२	१	६०	३८	—	—	—	६०.००
के. जे. ह्यूज	२	३	—	११२	८४	—	१	—	३७.३३
ए. एम. हिल्डिच	२	४	—	१३५	६२	—	१	४	३३.७५
डी. एफ. वाटमोर	२	३	—	७३	४३	—	—	१	२४.३३
जी. एन. यलप	१	२	—	३३	२५	—	—	—	१६.५०
के. जे. राइट	२	३	१	२६	१६	—	—	१४	१३.००
बी. यार्डली	१	२	—	२०	१९	—	—	२	१०.००
ए. जी. हर्सट	२	३	—	१६	१६	—	—	—	५.३३
पी. आर. स्लीप	१	२	—	१०	१०	—	—	—	५.००
जी. एम. वुड	१	२	१	५	५	—	—	—	५.००
डब्ल्यू. एम. क्लार्क	१	२	—	९	९	—	—	१	४.५०
आर. एम. हौग	२	३	—	१२	९	—	—	१	४.००
जी. डाईमोक	१	१	१	५	५	—	—	—	—

आस्ट्रेलिया—बौलिंग

	बोलिंग	मेडइन	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठ	एकपारी में ५ विकेट	औसत
हर्सट	७००	११	३२५	१५	५-९४	१	२१.६६
बोर्डर	१४४	५	४४	२	२-३५	—	२२.००
हौग	६००	१३	२५७	१०	४-४१	—	२५.७०
डाईमोक	३५८	९	१३७	४	३-६५	—	३४.२५
स्लीप	१२७	२	७८	२	१-१६	—	३९.००
यार्डली	२२४	५	९४	१	१-४२	—	९४.००
क्लार्क	३०४	१०	१०३	१	१-५६	—	१०३.००

पाकिस्तान—बैटिंग

	टैस्ट	इनिंग्स	नं०	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	कैच	औसत
आसिफ इकबाल	२	४	१	२२२	१३४	१	—	१	७४.००
जावेद मियांदाद	२	४	१	१८३	१२९	१	—	१	६१.००
ज़हीर अब्बास	२	४	—	११७	५९	—	१	१	२९.२५
माज़िद खां	२	४	—	१०९	१०८	१	—	१	२९.२५
हरून रशीद	१	२	—	५१	४७	—	—	१	२७.२५
इमरान खां	२	४	—	९०	३३	—	—	—	२५.५०
मुशताक मोहम्मद	२	४	—	८८	३६	—	—	१	२२.५०
वसीम राजा	१	२	—	४१	२८	—	—	१	२२.००
सरफ़राज नवाज़	२	४	—	६६	३५	—	—	—	२०.५०
मुदस्सर नज़र	१	२	—	३०	२५	—	—	१	१६.५०
मोहसीन खां	१	२	—	२८	१४	—	—	—	१५.००
वसीम बारी	२	४	१	८	८	—	—	१	१४.००
सिकन्दर बख़्त	२	३	१	५	५	—	—	६	२.६६
								—	२.५०

पाकिस्तान—बौलिंग

	बॉलिंग	मेडइन	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठ	एक पारी में ५ विटेट	१० विकेट मेडइन	औसत
वसीम राजा	६४	—	३४	२	२-२३	—	—	१७.००
जावेद मियांदाद	३२	—	२०	१	१-८	—	—	२०.००
सरफराज नवाज़	८९१	२१	३२२	१३	९-८६	१	१	२४.७६
मुदस्सर नज़र	२०९	४	८३	३	३-४८	—	—	२७.३३
इमरान खां	७५२	२३	२८५	७	४-२६	—	—	४०.७१
सिकन्दर बख़्त	२२४	२	९१	१	१-३३	—	—	९१.००
मुस्ताक़ मोहम्मद	१४४	—	७७	०	—	—	—	—
माजिद खां	७२	१	३४	०	—	—	—	—

बन्द करो बकवास



तुम्हारे बिन जी न लगे घर में···
बन्द करो बकवास, घर में जी नहीं लगा तो पिक्चर विक्चर जाना था। बच्चों को ले कर आफिस आने की क्या जरूरत थी ?
CLERK
अच्छा सनम कर ले सितम,
बन्द करो बकवास, रोज रोज तुम्हारा वजन बढ़ता जा रहा है, अभी भी तुम्हारा चाकलेट, आइसक्रीम बन्द न करूं तो क्या करूं ?
भली सी इक सूरत भला सा इक नाम···
बन्द करो बकवास, तुम जैसे चमचों को तो अब सब कुछ ही अच्छा लगेगा।
12

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

प्रहार करते समय सतर्कता से यह भी देखते रहिए कि दुश्मन आपके शरीर के कौन-से भाग को निशाना बना रहा है। इस लिए प्रहार करने के साथ ही बचाव भी करते रहना चाहिए।

(२७) इसी प्रकार पैर के अग्र भाग की हड्डी पर पैर की ठोकर मारिए। पिंडली के आगे की हड्डी जो घुटने की टोपी के नीचे से पंजे तक होती है। इस भाग पर ठोकर पड़ते ही विरोधी खड़ा नहीं रह सकता।

(२८) टखने के जोड़ पर यदि पैर की ठोकर पड़ जाए तो इस स्थान पर बड़ी पीड़ा होती है।



(२९) पंजे के उस भाग पर जहां जूते के फीते बांधे जाते हैं—यदि एड़ी की भरपूर चोट पड़ जाए तो विरोधी एक पैर से नाचता ही नज़र आएगा।

शरीर के पीछे वाले हिस्से के नर्मस्थल

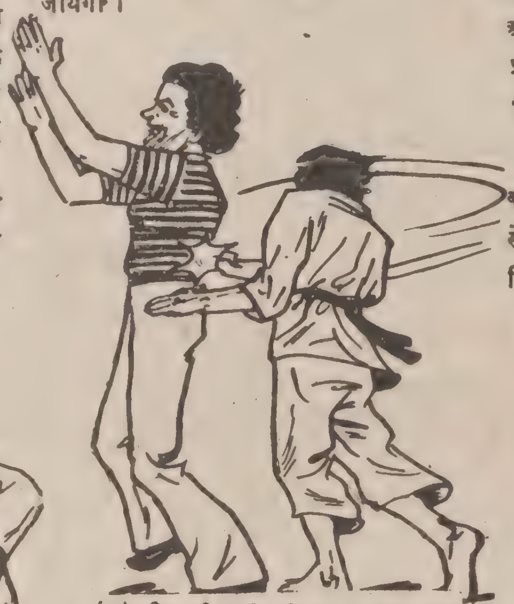
अभी तक आपने शरीर के आगे के हिस्से के नर्म-स्थलों की जानकारी प्राप्त की। अब आइए शरीर के पिछले भाग वाले नर्मस्थलों की जानकारी करायें।

१. कान के पीछे के भाग में एक उभरी हुई हड्डी होती है। ठीक उसके थोड़े नीचे का भाग काफी नर्म होता है। कैराटे चाप की चोट करने से पूरा सिर भन्ना जाता है तथा गर्दन अकड़ कर रह जाती है।

२. गर्दन का पिछला हिस्सा जहां रीढ़ की हड्डी का सिरा होता है—वहां यदि कैराटे चाप या घूंसे का प्रहार किया जाए तो गर्दन में मोच आ सकती है। हड्डी टूट या सरक भी सकती है। यहां प्रहार करने से बहुत पीड़ा होती है।

(३) रीढ़ की हड्डी का वह स्थान जहां कंधे की चौड़ी हड्डियां आकर मिलती हैं, उसके बीच के रीढ़ वाले स्थान पर घूंसा या पैर की ठोकर मारिए।

(४) कोहनी की पीछे निकली हुई गांठ पर घूंसे का प्रहार कीजिए—हाथ बेकार हो जायेगा।



(५) रीढ़ की हड्डी जो कमर के बीच में होती है, वहां घूंसे या कैराटे चाप अथवा पैर की भरपूर ठोकर मारिए। विरोधी बल खाकर गिर जाएगा।

(६) कलाई के पिछले हिस्से पर कैराटे चाप का प्रयोग कीजिए। हाथ की उंगलियां तक शिथिल पड़ जायेंगी।

(७) जांघों के बीच में पीछे से घुटने की ठोकर मारिए. विरोधी औंधा गिरेगा। यहां की चोट भी असहनीय होती है।

(८) घुटने के पीछे वाले जोड़ पर पैर की ठोकर मारिए। अच्छे से अच्छा बलशाली और भारी भरकम व्यक्ति भी खड़ा नहीं रह पायेगा।

(९) पिंडली पर पैर की एड़ी का प्रहार कीजिए। विरोधी का पैर मोच खा जायेगा।

(१०) एड़ी के ठीक ऊपर पीछे की ओर एक पतली-सी मुलायम नली होती है इस जगह पैर की उंगलियों के नीचे की गद्दी की अथवा एड़ी की ठोकर मारिए। दुश्मन लड़खड़ा जाएगा।

शरीर के इन कमजोर व नाजुक हिस्सों को अच्छी तरह ध्यान में रखिए और वक्त पड़ने पर जहां जैसा मौका हो—शरीर के इन्हीं कमजोर स्थानों पर प्रहार कीजिए। यदि आपने शरीर के इन कमजोर स्थानों को अच्छी तरह समझ लिया और उन स्थानों पर चोट करने का तरीका भी जान लिया तो शत्रु पर आप सहज ही विजय प्राप्त कर सकते हैं।

चित्रों द्वारा शरीर के इन मर्मस्थलों को भली-भांति दर्शाया गया है। इन स्थानों पर ध्यान दीजिए और स्वयं अपने शरीर के इन मर्मस्थलों को भी टटोलकर, दबाव डालकर या हल्की चोट मारकर अभ्यास भी कीजिए और साथ ही अनुभव भी कीजिये कि इन स्थानों पर प्रहार करने से कितनी पीड़ा होती है। अभ्यास के दौरान यदि आप अपने किसी साथी पर जोर आजमायें तो प्रहार बहुत ही हल्का करें।

गिरने का अभ्यास कैसे करें

जिस प्रकार आप आक्रमण और बचाव का अभ्यास करते हैं और उसे जितनी लगन से सीखते हैं—उतना ही जरूरी यह भी है कि आप गिरना भी सीख जायें। क्योंकि



लड़ाई में या खेल में उठना-गिरना तो अनिवार्य है ही। इसलिये गिरने के तौर तरीके जानना भी बहुत जरूरी है, जिससे आपका शरीर या शरीर के आवश्यक अंग (खास तौर से हाथ, सिर या मुंह) किसी गहरी चोट खाने से बच जायें। गिरना भी एक कला है। आपने सर्कस में खिलाड़ियों को गिरते देखा होगा। किस खूबी से वे जमीन पर या जाल पर गिरते हैं और कलाबाजी खाकर तुरन्त उसी फुर्ती से उठ खड़े होते हैं।

मान लीजिये यदि शत्रु आपको चोट मारकर जमीन पर गिरा देता है और आप इस तरह गिरते हैं कि आपका हाथ आपके ही शरीर के नीचे दब जाए और मोच खा जाए या टूट जाये अथवा आप मुंह के बल गिरें और मुंह जख्मी हो जाये तो पीड़ा के कारण आप उठ सकने में असमर्थ हो जायेंगे और शत्रु आप पर हावी हो जाएगा। ऐसी स्थिति में आप अपनी या किसी अन्य साथी की रक्षा नहीं कर सकते। साथ ही आप स्वयं भी शारीरिक हानि उठा बैठते हैं।

क्रमशः





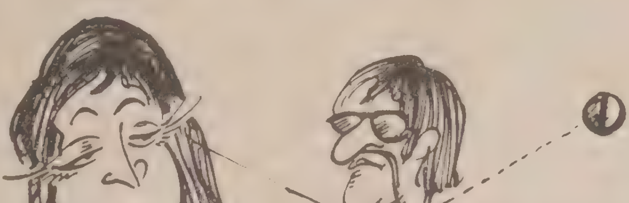
यदि प्रेमिका आपसे कहे कि घरवाले उसकी शादी कहीं और कर रहे हैं तो मानिये कि वह जान-बूझकर आपको चोट पहुंचाने के लिए बम्पर और वॉली लाइन बाऊलिंग कर रही है। चौकन्ने रहिये।



यदि रेस्टोरेंट में जाने पर प्रेमिका अनाप-शनाप आर्डर दिये जा रही है, महंगी से महंगी आइटम मंगा रही है, तो समझिये आपको रन आऊट कराने की कोशिश कर रही है।



यदि प्रेमिका आपसे मिलने अपने छोटे भाई को साथ लेकर आती है तो समझिये कि वह बहुत कसी हुयी गेंद-बाजी कर रही है। आपको कोई रन बनाने का मौका नहीं देना चाहती।



यदि प्रेमिका तिरछी चितवन फेंके तो समझिये कि वह इन स्विंगर आऊट स्विंगर फेंक रही है। आपके बल्ले का बाहरी किनारा लेकर स्लिप फील्डर से कैच आऊट हो सकता है।



यदि प्रेमिका कहे कि वह मां बनने वाली है तो समझिये कि यह एल. बी. डब्ल्यू. की जोरदार अपील है। अम्पायर की अंगुली उठने ही वाली है।

व्यंग्य

हे भ्रष्टाचार देव आप जुग-जुग जियें

- डा० राम सिया सिंह

हम हैं भीषणपुरी की भीड़ भरी राजनीति के भ्रष्ट पंडे, जो घिसपिट कर भी अपनी कुर्सी से इस तरह चिपके हुए हैं कि अलग होने का नाम नहीं लेना चाहते। निर्बल के एकमात्र संबल हे भ्रष्टाचार महाराज, हमें आपका ही एकमात्र सहारा है। यदि आपने हमारे ऊपर कृपादृष्टि न रखी होती तो हम न जाने कब के अंटाचित्त हो गये होते। आपकी ही माया का प्रताप है कि हम भोंदू जनता के मनों को 'टका सेर भाजी, टका सेर खाजा' के हिसाब से खरीदने में समर्थ हो पाते हैं। हे महिमामय, आपके दूत कंचन और कामिनी के साथ सुरा शरबती के बल से हम जनता के विवेक पर चोट करके वोट को नोट के बल पर खरीद लेते हैं। अपने दल के लोगों को हम आपके ही बल पर माखन-मिश्री और रेवड़ी बांटने में समर्थ होते हैं। विरोधी दल के विधायकों को मूलीभाजी के भाव खरीदने में भी हमें आपका भलीभांति सहयोग प्राप्त होता है। कुर्सी पर विराजमान होकर हम आपके बल पर ही अपने परिवार और भाई-भतीजों को मालामाल कर पाते हैं। हे भ्रष्टाचार देव, आप न होते तो राजनीति की हमारी पंडागिरी न जाने कब की खत्म हो गई होती। आपको कोटिश: दण्डवत्, आप जुग जुग जियें।

और हम हैं विपन्न देश की ठठरी को निचोड़कर अपनी तोंद भरने वाले बेपार व्यापारी। आजकल कुछ लोग हमें पूंजीपति कहकर हमारा सम्मान करते हैं। हे भ्रष्टाचार महराज, आपकी छत्रछाया में ही हमारी तिजोरी कभी खाली होने का नाम नहीं लेती। आपके ही बल पर हम जनता के खून को जोंक की तरह चूस-चूस कर अपनी सेहत बनाने में समर्थ होते हैं। आपकी ही माया का प्रताप है कि हम हल्दी में रंगा आटा, जीरा में लकड़ी के टुकड़े, चावल में कंकड़, सरसों में रेन इत्यादि मिलाकर 'पारस परस कुधात सुहाई' कहावत चरितार्थ करने में समर्थ हो पाते हैं। और तो और दवाइयों में भी जहर मिलाकर रुपये पैदा करना आपकी ही देन है। और हम ऐसा करके देश की गरीब जनता की ही तो भलाई करते हैं। कोई व्यक्ति यदि अपनी दीनदशा से क्षुब्ध होकर आत्महत्या करने के लिए दवा की दूकान से जहर खरीदता है तो वह मर नहीं पाये, इसीलिए हम जहर में भी मिलावट करने में संकोच नहीं करते भला इससे अधिक परोपकार, और क्या हो सकता है।

और हे देवाधिदेव, हम हैं इस देश की रीढ़ की हड्डी—सरकारी कर्मचारी। हे देव, आपकी ही कृपा का फल है कि हम अपने लघु वेतन की परवाह किये बिना अपने पद पर बने रहकर देश की सेवा करते रहते हैं। हमसे बड़ा देशभक्त और कौन हो सकता है। हमारे दफ्तर में नाक रगड़ने वाले बेचारे गरीब न जाने कब तक नाक ही रगड़ते रह जायँ। किन्तु उनसे दो-चार रुपये भी प्राप्त करके हम उन्हें इससे मुक्ति दिला देते हैं। चाहे ट्रांसफर हो चाहे प्रमोशन, चाहे नई नियुक्ति हो या पुरानी, हर अवसर पर हमें आपकी कृपा से धनराशि कमाने के मार्ग खुले रहते हैं। चाहे चक्कर का काटा देना हो या बस का परमिट, चाहे दूकान पर छापा मारना हो या आयकर की चोरी पकड़ना हो; हम गिरगिट की तरह रंग बदल कर गिटपिट भाषा में बात करके अपनी आय के अमिट स्रोत को कभी सूखने नहीं देते। हे कृपालु, ऐसा करके हम अपने राष्ट्र की आय को ही बढ़ाते हैं क्योंकि हमारी निजी जेब भरे या सरकारी, आखिर देश की सम्पदा तो बढ़ती ही है। आपको हमारा कोटिश: प्रणाम है। हे भ्रष्टाचार देव, आपकी संकटमोचनकारी प्रवृत्ति के कारण हम अपने संकट के साथ-साथ देश के लाखों अपढ़-निरक्षरों के संकट को भी दूर करने में सक्षम हो पाते हैं।

हम हैं त्रिपुण्डधारी विशाल तोंद के धनी, कोई नकली नहीं, बल्कि असली पंडे। हे देवाधिदेव, हमने जगद्व्यापी परमेश्वर को, मन्दिर, मस्जिद और गिरजा में बंद करके आम जनता को उसे सर्वसुलभ बना दिया है। आपकी ही दया है कि हम धर्मभीरु जनता को परलोक के सुख दिखलाकर लौकिक सुखों से वंचित करने में सक्षम होते हैं ताकि इन लौकिक सुखों पर हमारा एकाधिकार रह सके। हम बदलते हुए समय के अनुसार अपने आपका रंग बदल लेने में किसी प्रकार की हानि नहीं समझते। जब चांदी का सिक्का चलता था, तब हमारे भगवान चांदी के सिक्के मांगता था; जब कागज के नोट चल निकले तो उसका काम नोटों से ही चलने लगा और अब नये सिक्के चलने पर भगवान उन्हें भी स्वीकार करने लगा। मुहम्मद तुगलक के समय में शायद वह चमड़े के सिक्के भी स्वीकार करने लगा था। भगवान किस प्रकार के सिक्के चाहता है, वह केवल हमसे ही बतलाता है, भक्तों से नहीं। भक्तों से तो वह बातें भी नहीं करता। हमारे माध्यम से ही भक्त उसके बारे में जानते हैं। हम चाहें तो भगवान की मूर्ति मिट्टी की बना लें, चाहें तो पत्थर की, चाहें तो पीतल की बना लें चाहें तो सोने की। हम स्वयं ही भगवान के सर्जनहार हैं। भक्तों को हम जिस रूप में चाहते हैं भगवान के दर्शन करा सकते हैं। हम चाहे सत्यनारायण की कथा सुनायें, चाहे बालमीक रामायण, चाहे बगीचे की शादी करवा दें, चाहे भागवत सुना दें। सब कुछ हमें सुलभ है। आपकी ही कृपा का फल है कि भगवान हमारे भक्तों को तो सभी कुछ दे सकता है और बदले में भक्तों को भेंट चढ़ानी पड़ती है। विडंबना है तो यही कि भगवान हमें कुछ नहीं देता, इसीलिए हमें अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए भक्तों के मुंह की रोटी को ही छीनना पड़ता है। हे भ्रष्टाचार महाराज, आपकी ही कृपा है कि युगों से हम भोले भक्तों की आंखों में धूल झोंककर अपना उल्लू सीधा करते आ रहे हैं और करते जायेंगे। हम उस स्वर्ग का टिकिट और गारन्टी भक्तों को दे सकते हैं जिसे न हमने कभी देखा और न हमारे बाप-दादों ने। शायद इसीलिए कृपालु जन हमें पोंगापंथी के खिताब दे हमारा सम्मान करते हैं। हम भक्तों को स्वर्ग भेज सकते हैं, मगर स्वयं आप स्वर्ग जाने को तैयार नहीं। हम ईश्वर के दर्शन हजारों-लाखों भक्तों को रोज करवाते हैं, मगर हे देवाधिदेव, केवल आप ही जानते हैं कि हमने स्वयं भगवान के दर्शन कभी नहीं किये। करें भी तो कैसे, वह तो घट-घट में विद्यमान है और हमें तो गरीब-अमीर हर प्रकार के भक्तों की जेब देखने से ही फुरसत नहीं मिल पाती तो अपने अन्दर झांकने की फुरसत कैसे मिले। हे देव, आपकी महिमा का ही प्रताप है कि हम धर्मभीरु जनता को धर्म के नाम पर लड़ाते-झगड़ाते रहते हैं ताकि वे हमारी पूजा करते रहें। एक ओर तो हम कहते हैं कि ईश्वर का निवास प्रत्येक प्राणी के अन्दर समान रूप से है, दूसरी ओर छूत-अछूत, छोटे-बड़े, ऊंच-नीच के नाना प्रकार के भेदभाव पैदा कर

(शेष पृष्ठ 32 पर)

मदहोश



परिणाम

दीवाना—कैमल

रंग भरो प्रतियोगिता नं० ६ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—अशोक कुमार वर्मा—बड़वा, भिवानी (हरियाणा)

द्वितीय पुरस्कार—सीमा सक्सेना—भूड़, बरेली (उ० प्र०)

तृतीय पुरस्कार—राजेन्द्र चोपड़ा—जालन्धर ।

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. मन्जू विष्ट—उत्तर काशी, २. कपिल गुप्ता—जयपुर, ३. दिनेशविज—दिल्ली, ४. हर्ष शर्मा—इन्दौर, ५. मनीश ए० रॉबर्ट—दिल्ली ।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. कमल किशोर राजन—अजमेर, २. नीरा सलूजा—बर्दवान, ३. नहीम अहमद भूरा—गढ़वाल ४. कुमारी शारदा—अमरावती, ५. सुदीप कुमार—नई दिल्ली ।

कैमल सर्टिफिकेट

१. रवि कुमार खरे—जबलपुर, २. रामस्वरूप शर्मा—आगरा, ३. कु० अनुराधा पाठक—रायपुर, ४. नवीन जैन--नई दिल्ली, ५. मनमोहन कुमार—नई दिल्ली, ६ मीना सक्सेना—नई दिल्ली, ७. सुनीता रंगटा—नई दिल्ली, ८. नैना ख्यालदास—उल्हासनगर, ९. विनोद कुमार रस्तोगी—काठमांडो, १०. शारदा कुमारी शर्मा—दिल्ली ।

अंक २६ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं का हल

ज	न	म	त
प	व	ना	र
त	र	क	स
प	स	र	ना

वर्ग पहेली विजेता—यदुनाथ शर्मा, जी०-२५१, नौरोजीनगर, नई दिल्ली-११००१६

तुक्कम-तुक्का विजेता—कु० रमा मालपानी द्वारा श्री सी० एल० मालपानी एडवोकेट, जवाहरनगर कालोनी, लश्कर, ग्वालियर ।

सोचिये प्रतियोगिता—लालच में आकर व्यक्ति अपना विचार बदल देता है ।

विजेता—जोन थामस, डीजल ड्राईवर, ब्लाक नम्बर १५१५ एल, रेलवे ओल्ड कालोनी तीसरी मंजिल रतलाम ।



● एक—विवाहित पुरुष जब भी देखो पिटपिटाये से नजर आते हैं । क्या कभी उसका वक्त नहीं बदलता ?'

दो—'नहीं', क्योंकि उनके हमेशा बारह बजे रहते हैं ।'

● एक सेठ बहुत लोगों का कर्जदार हो गया और अन्त में एक दिन दिवालिया घोषित किया गया । अदालत में सारे लोग अपने-अपने कर्जे के दावे ठोंक रहे थे, सेठ भी एक टैक्सी में अदालत पहुंचा । टैक्सी ड्राइवर को मैजिस्ट्रेट के सामने अदालत में ले गया । और टैक्सी का किराया भी कर्ज के दावों में शामिल करवा दिया । सेठ जी की हिम्मत देखो ।

● मरीज—डाक्टर साहब मुझे अजीब मानसिक बीमारी है ।

डाक्टर—अच्छा ! क्या है ?

मरीज—मुझे हर समय ऐसा लगता है कि मैं एक व्यक्ति नहीं हूं बल्कि हम दो हैं ।

डाक्टर—अच्छा जरा दोबारा बताओ क्या बीमारी बताई तुमने ? इस बार कृपया दोनों एक साथ न बोलें ।

(पृष्ठ ३० से आगे)

उन्हें हजारों टुकड़ों में बांट रखा हैं। ताकि वे कभी एक होकर खड़े न हो सकें। इस तरह हमने राष्ट्र की छाती पर कांटे बो रखे हैं। भक्तों की गाढ़ी पसीने की कमाई को अपनी जेब में भरकर हम सुरा-सुन्दरी के पीछे यदि उसे खर्च करते हैं तो ऐसा करके एक परोपकार ही तो करते हैं क्योंकि वही पैसा आखिर फिर समाज में ही तो वापस चला जाता है।

हे भ्रष्टाचार देव, कभी आपको देखकर लोग नाक भौं सिकोड़ते थे, परन्तु अब उनमें अक्ल आ गई है और आपकी ही माहिमा का फल है कि अब आपको भ्रष्टाचार न कहकर लोग शिष्टाचार ही कहना अधिक पसन्द करते हैं। देश का शायद ही ऐसा कोई कोना हो, जहाँ आपके चरण-कमल का स्पर्श न हो पाया हो। वे लोग महा अज्ञानी हैं, जो यह कहते हैं कि कोई राष्ट्रीय चरित्र नहीं है। सचमुच वे आपकी असलियत का एहसास न कर पाने के कारण ही ऐसी थोथी बातें अपने मुख-कमल से प्रस्फुटित करते हैं। वस्तुतः आप स्वयं ही हमारे राष्ट्रीय चरित्र की जीती-जागती तस्वीर हैं। क्या राजनीतिक, क्या आर्थिक, क्या सामाजिक, क्या धार्मिक, क्या शैक्षणिक क्या सांस्कृतिक —ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ आप विद्यमान न हों। वस्तुतः हे देवाधिदेव, आप सर्व व्यापी हैं। आप पतितपावन और जीर्णोद्धारक हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समूचे राष्ट्र का उद्धार करने के लिए ही आपका अवतार हुआ है और आपकी प्रतिभा का प्रसार दिन दूनी रात चौगुनी गति से हो रहा है। वस्तुतः राष्ट्र के चोटी के कर्णधारों से लेकर सड़क-छाप ऐरों-गैरों तक, बड़े-बड़े सरकारी दफ्तरों से लेकर छुटभैया अफसरों तक, विशाल पूंजी के मालिक उद्योगपतियों से लेकर टुटपूंजिये व्यापारियों तक-सभी को आपने उपकृत किया है। जिस तरह सूरज एक है मगर उसकी गर्मी और प्रकाश संसार के सभी निवासियों को उपलब्ध हैं। उसी तरह आप एक होते हुए भी आपकी छत्रछाया लाखों करोड़ों लोगों पर है।

हे देव, जो आपकी पूजा नहीं करता, वह मूढ़ ही नहीं, महामूढ़ कहा जाएगा। इस घोर कलियुग में दस-पांच देकर सौ-पचास का फायदा हो, दो-चार हजार देकर यदि दस-बीस हजार का फायदा हो तो इसे व्यापारिक चातुर्य ही कहा जाएगा। जो आपसे घृणा करता है, उससे घृणा करके लक्ष्मी भी उसका साथ छोड़ देती है। जो आपकी महिमा से अनभिज्ञ है और आपका नाम सुनकर नाक-भौं सिकोड़ता है इस घोर कलिकाल में वह निपट भोंदू बसन्त ही कहा जाएगा। आपकी करामाती छत्रछाया का सहारा लेकर जो चकाचौंध पैदा नहीं कर सकता, उसे अनाड़ी नहीं तो और क्या कहा जाएगा? वस्तुतः जो आपका तिरस्कार करते हैं, सारा संसार ही उनका तिरस्कार करने लगता है। वह व्यक्ति दाने-दाने को मुहताज हो सकता है जिस पर आपका वरदहस्त न हो। कहते हैं कि अचार और मुरब्बा जितना ही पुराना होता जाता है उतनी ही उसकी खूबी बढ़ती जाती है। इसी प्रकार हे भ्रष्टाचार देव, आप ज्यों-ज्यों अधिक जवान होते जाते हैं, अधिक पुराने होते हैं, त्यों-त्यों आपकी खूबियां



दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ती जाती हैं। आने वाले दशक और शताब्दियाँ ही यह बता पायेंगी कि आपका भविष्य कितना स्वर्णिम है। आपकी चन्द कलायें ही जब इतनी कमालमय हैं तो चौसठ कलाओं के रूप में जब आपका स्वरूप निखरेगा, तब आप कितने आकर्षक और मनोरम न होंगे!

हे कृपा के सागर, आपने हमारे देश की खाद्य-समस्या को हल करने में राष्ट्र की बड़ी मदद की है, इसके लिए राष्ट्र को आपका कृतज्ञ होना चाहिए। पहले लोग चावल, दाल, गेहूं सब्जी आदि खाकर ही अपना पेट भरते थे। मौज आई तो मांस-मछली पर भी हाथ साफ करके अपने पेट की ज्वाला बुझा लेते थे। मगर इन पदार्थों की कमी को देखते हुए लोग अब पैसा, ईंट, पत्थर, सीमेंट लोहा, लकड़ी और न जाने क्या-क्या खाने लगे हैं। उनके लिए न खाने योग्य यदि कोई चीज बची है तो वह है शर्म।

हे लोकव्यापी मायापति, आपका सहारा लेकर सड़क छाप नेता बड़ी-बड़ी मंत्रियों की कुर्सी तक पलक झपकते ही पहुंचने में सफल हो पाते हैं। आपके सहारे छोटे-मोटे कर्मचारी और बेघर बार लोग भी बड़े-बड़े अफसर की कुर्सी को आबाद करने में समर्थ हो पाते हैं। फिर आपके रूप भी तो अनेक हैं। भक्तजन अपनी श्रद्धानुसार आपको जिस रूप में चाहें पा सकते हैं—चाहे चाय के रूप में चाहे पान के रूप में, चाहे नाश्ते के रूप में चाहे भेंट के रूप में, चाहे बोतल समर्पित करके चाहे छैलछबीली सुन्दरी हाजिर करके, चाहे मुर्ग मुसल्लम खिलाकर चाहे मुर्गी पका कर, चाहे नोट के रूप में चाहे वोट के रूप में—अपनी आस्था और सामर्थ्य के अनुसार श्रद्धालु जन आपको किसी भी रूप में प्राप्त कर सकते हैं।

हे देवाधिदेव, आप धन्य हैं, आपको कोटिशः धिक्कार है। आपकी महिमा से यह देश किस दिन रसातल को चला जाएगा यह कहना कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देश को तल, वितल, रसातल और तलातल में भेजकर इसका जीर्णोद्धार करने के लिए ही आप किसी अन्य लोक से इस लोक में पदार्पण किये हैं।

इस देश के समान और कितने ही देशों का उद्धार आप कर सकें, मगर कोई भी आपका उद्धार न कर पाये, इस भूमंडल को यही वरदान देने की कृपा कीजियेगा। जो आपकी शीतल छांह में विश्राम करने के बजाय यहां वहां चक्कर काटता फिरेगा, उसका बेभाव पतन उसी प्रकार निश्चित है जैसा कि स्काइलैब का।

हे मायापति भ्रष्टाचार जू देव, आपकी विशाल महिमा से अनजान आपको कोटिशः नमस्कार है। आप धन्य हैं, आप जुग-जुग जियें।


सवाल यह है ?
क्या इनका भी कोई जवाब है ?
जनता पार्टी दो जगह बंट गई है, पर जनता एक ही है, और दोनों का दावा है जनता उनके साथ है ।
मैं गरीब और दुखी जनता का सच्चा मित्र हूं ।
नहीं जनता के दुख दर्द को मैं समझता हूं ।
असली जनता
जनता पार्टी
जनता पार्टी (एस०)
जनता की सेवा मैं करूंगा ।
नहीं जनता की सेवा का अधिकार केवल मुझे है ।
असली जनता
जनता पार्टी
जनता पार्टी (एस०)
असली जनता
परे हट जा, जनता ने मेरा साथ देने का वचन दिया है ।
हाय-हाय, मुझे करने दो जनता की भलाई, मैं तो पागल हो जाऊंगा जनता के गम में रो रोकर ।
मेरी प्यारी जनता को मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता ।
भगवान ने मुझे पैदा ही जनता की सेवा के लिये किया है,
असली जनता
जनता पार्टी
जनता पार्टी (एस०)
अरे कोई मुझे भी बता दो, भगवान ने मुझे किस लिये पैदा किया है ।

अंधेरे

५ रुपये जीतिये

अंधेरा

एक युवक पार्क में उदास बैठा था। जीवन से निराश था। असफलताओं की अंधेरी घड़ियों में डूब चुका था।

एक महात्मा वहां आया। उसने युवक से उदासी का कारण पूछा !

युवक बोला, 'मेरी सारी उम्मीदें धूल में मिल गयी हैं, मेरे चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा है।'

महात्मा ने समझाया, 'जरा सोचो ! दिन के उजाले में सबसे दूर की चीज जो तुम्हें नजर आ सकती है वह सूरज है लेकिन अंधेरा होता है तो तुम सितारों को देख सकते हो जो कि सूरज से भी खरबों मील दूर हैं ! इससे सबक सीखो !'

युवक समझ गया।

सारांश :—

अन्तिम तिथि— ८.९.७९

: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

तुक्कम तुक्का

मुकाबला

पुरस्कार ५रु०

हम इस प्रतियोगिता में हर सप्ताह एक नेता को लेंगे। आपको उस नेता के नाम के अक्षरों से क्रमवार एक व्यंग्य कविता लिखनी होगी जो उसके कारनामों पर फिट बैठे। उदाहरण के तौर पर हमने राजनारायन जी पर कविता लिखी है। उसी प्रकार आप नीचे लिखे नाम पर कविता लिख भेजिए। नाम के सारे अक्षरों से क्रमवार कविता की लाइनें बनानी चाहिये।

सर्वश्रेष्ठ कविता को पुरस्कार

रायबरेली के बैसाखी नंद हैं ये,
जनता पार्टी की दाल भात में मूसरचंद हैं ये।
नाना बयान रोज अखबारों को देते हैं,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की खबर लेते हैं।
यह साहब जिसके पक्ष में खड़े होते हैं,
नादानी से उसी की लुटिया डुबोते हैं।

के.सी.पन्त

दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की अन्तिम तिथि ८-९-७९

'उत्तर केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

तुक्कम तुक्का
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अनमोल लतीफे

● मन्त्री जी को दिल का दौरा पड़ा। कुछ ही घंटों बाद उनकी बीबी को भी दौरा पड़ा क्योंकि वह हर दौरे पर उनका हमेशा साथ देती रही थीं।

● एक फुटबाल रेफ्री की शादी हुई। जब-जब भी झगड़ा होता है रेफ्री महोदय तंग आकर बीबी को जेब से पीला कार्ड निकालकर उसे दिखाते हैं। बीबी भी समझदार है। पीलाकार्ड देखते ही अपने मायके चली जाती है।

● एक हॉकी खिलाड़ी का डाक्टरी मुआयना हुआ तो पाया गया कि उसका दिल बायीं ओर होने की बजाय दायीं ओर था। डाक्टर ने उसे ऑफ साइड करार दे दिया।

● एक मोटा व्यक्ति पालकी में सफर करता था। दिनों दिन और मोटा होने लगा तो कहारों के लिए उसे उठाने में ज्यादा मेहनत लगने लगी। उन्होंने मजदूरी बढ़वाने के लिए अर्जी लिखी और अंत में अपने नाम के ऊपर लिखा 'आपके आभारी।'

● एक दिल्ली का फन्नेखां बम्बई गया और रौब जमाने के लिए एक दुकान पर कद्दू पर हाथ रखकर बोला, 'यहां के सब इतने छोटे होते हैं ?'

दुकानदार बोला, 'भाई साहब लेना हो तो लीजिये वर्ना इस अंगूर पर से हाथ उठा लीजिए।'

● एक वेटर का अंतिम समय आया तो यमदूत रेस्टोरेन्ट में गर्म टेबल पर बैठे और वेटर को बुलाकर यमलोक चलने का आर्डर दिया। वेटर 'अभी लाया' कह कर गया और फिर नहीं लौटा। यमदूत अब तक टेबल पर बैठे उसकी राह देख रहे हैं।

● एक कवि कविता सुनाने लगे। लोगों ने हूटिंग शुरू की। लोग चिल्लाने लगे, 'बैठ जाओ—बैठ जाओ' कवि ने जोर से चीखकर कहा, 'भाइयों, काश आप जैसे सज्जन लोग हमें बसों में मिलें। वहां खड़े ही रहना पड़ता है कोई बैठने के लिए नहीं कहता।'

● एक लड़की कारवालों से लिफ्ट मांगती और उनकी जेबें काट देती थी। एक दिन रंगे हाथ पकड़ी गयी। अदालत में मामला पेश हुआ तो सरकारी वकील ने उसे बुरी तरह लताड़ा और बोला, 'तुम जैसों का पता है मरने के बाद क्या होता है ? नर्क जाना पड़ता है।

लड़की बोली, 'कोई बात नहीं ! आपसे लिफ्ट ले लूंगी क्योंकि आप भी उधर ही जा रहे होंगे।'

● एक जोरू का गुलाम था। एक बार एक एक्सीडेंट में फंस गया। पांच वर्ष बाद जब बीबी मायके गयी तब उसे पता लगा कि एक्सीडेंट में उसके बोलने की शक्ति नष्ट हो गयी थी।

● छः वर्ष से छोटे बच्चों की एक स्थान पर फुटबाल टीमें बनीं। एक मैच के बाद पप्पू घर आया तो खुशी से फूला न समा रहा था।

पिता ने हैरान होकर पूछा, 'क्यों तुमने सचमुच १६ गोल ठोंक दिये ? यकीन नहीं आता। दूसरी टीम का गोल कीपर क्या करता रहा ?' पप्पू ने उत्तर दिया, 'डैडी उसका पेट खराब था ज्यादातर समय वह मैदान के कोने में बैठा...करता रहा।'

● मूर्ख कौन है ?

जो दोनों पैरों से पानी की गहराई नापने का यत्न करता है।

ताजमहल देखने के चक्कर में

शिवकुमार

जब पिताजी ने मुझसे ताजमहल दिखाने की बात कही तो मेरी खुशी का ठिकाना ही न रहा और मेरे अन्दर आशाओं के पूल बनने लगे। हमारा वहाँ दो दिन का प्रोग्राम था, परसों जाना था। पापाजी ने तीन टिकिट ले रखे थे।

मुझे सवेरे शाम वही रट, इसके अलावा कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। हुआ ये कि इसी सोच में डूबा हुआ कि हम ताज महल देखेंगे वहाँ ये खरीदेंगे वो खरीदेंगे, मैं साइकिल चला रहा था। अचानक एक औरत सामने आ गई तो साहब साइकिल भिड़ गई। साइकिल का तो नुकसान हुआ



साथ औरत तथा घर पर पापा की डाट ने बुरा हाल कर दिया। एक पन्त तीन काज हो गये।

यहाँ तक की सपने में भी आगरा ही घूम रहा था। सपने में पता लगा कि अचानक एक हवाई जहाज खराब हो गया और ठीक ताजमहल के ऊपर आ गिरा। मेरी नींद टूटी और मैं हड़बड़ा कर उठा और बोला, मम्मी ताज महल तो गिर गया। अब हम क्या देखेंगे? मम्मी बोलीं क्या बड़बड़ा रहा है!' और फिर हंस पड़ीं।

इन्तजार के क्षण समाप्त हुए। और वह घड़ी भी आ गयी जब हम तीव्र घंटों से निकल कर अपने समय के अनुसार स्टेशन पर पहुँचे। काफी देर तक खड़े रहने के बाद जब गाड़ी न आई तो पापाजी ने स्टेशन मास्टर से पूछा, तब पता लगा कि गाड़ी एक घंटे की जा चुकी है। हुआ यूं कि हमारे घर का टाईम टेबल बहुत पुराना था गाड़ी का समय कब का बदल चुका था। इस पर सबने सिर पीट लिया!

अब सोचा, आये तो हुए हैं। सामान भी तैयार है, क्यों न ६ बजे की गाड़ी में चलें। सामन काफी था, सोचा पता नहीं ६ वाली गाड़ी कौनसे प्लेट फार्म पर आये। ६ बजे गाड़ी ४ नं० प्लेट फार्म पर आई। और हम १ नं० पर थे! ठहरने का समय ५-६ मिनट था। जल्दी कुली करने की सोची तो कोई कुली मिला नहीं। काफी देर बाद कुली मिला तो गाड़ी छुटने में दो मिनट थे। हम सब भागे पर सब बेकार गाड़ी सीटी दे चुकी थी। और हम मुंह देखते रहे! इतना गुस्सा आया उस टाईम टेबल पर कि बस……!

अच्छा निकला शनिवार का दिन हम शनि देवता को प्रणाम करके अपना सा मुंह लेकर घर लौट आये!

हाये-रे-ताज महल………।

जब मैं उल्लू बना

मेरे चेहरे पर चेचक के दाग हैं। एक दिन मैं बाहर बैठा पत्रिका पढ़ रहा था। तभी हाथ में एक अटैची लटकाये मुंह पर दाढ़ी, मूंछ व चश्मा लगाये एक सज्जन अन्दर आकर बोले, 'भइया तेरे चेचक के दाग मिटवाने हैं क्या?।' 'मैंने कहा, 'हां सरदारजी क्यों क्या बात है?' मैंने सोचा कि चलो चेहरा बदल जायेगा। मैं उन्हें अन्दर ले आया मेरी मां, दादी व सभी ने कहा बेटे इनसे कुछ नहीं होगा। लेकिन मुझे तो एक लगन लग गई, सरदारजी ने एक छोटा बर्तन मंगाया और कड़वा तेल मंगाया। मैंने यह काम फटाफट किया और उन्होंने सारा सामान मिला कर एक शीशी में डलवा दिया और मैंने उन्हें २७ रु० दिये। उन्होंने एक रसीद दी और बताया की यह दवा तुझे ५ सप्ताह तक लगानी है। मैं हर सप्ताह तुझे यहां आकर देखता रहूंगा। मैंने उनसे पूछा कि यह २७ रु० क्यों? उन्होंने कहा कि हमारी परोपकारी संस्था है वह पूरे पैसे लेती है ज्यादा या कम नहीं। मैंने उन पर पूरा विश्वास कर लिया। मै दवाई का मुंह पर लेप करता रहा। तीसरे दिन वह दवाई आँख में गिर गई तो उससे मेरी आँख लाल होकर दुखने लगी। पांचवें दिन मेरा सारा मुंह फट गया, सारे मुंह पर खुजली आने लगी। मैंने सोचा कि अगर सरदारजी आ गये तो मैं और मेरे साथी उनका भुर्ता बनाकर रख देंगे। मगर वहां तो सरदारजी का नामोनिशान भी न आया था। मैं सरदार जी को कोस रहा था। अगर सरदार जी आ गये तो उनसे २७ रु० की जगह ३० रु० निकलवाऊंगा। पर मेरे २७ रु० जाने थे सो चले गये। एक दिन बाद वह दवाई एक सफेद परत बन गई। जब भी कोई सरदार मेरे को दिखाई देता है तो, मैं फट से उसे पहचानने की कोशिश करता हूं।

पवन कुमार मोहता-सादुलपुर (चूरू)

आप भी अपने जीवन की कोई ऐसी घटना हमें लिखकर भेज सकते हैं। अच्छी घटना को पाठक के नाम के साथ दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। —सं०

किसानों की सरकार को दीवाने सुझाव

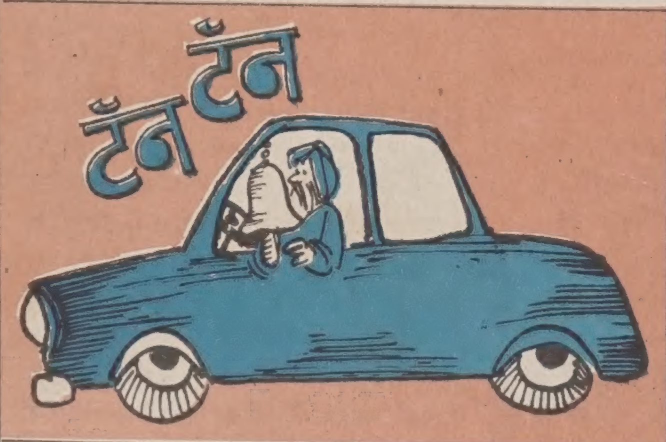
भारत के इतिहास में पहली बार एक किसान का बेटा प्रधानमंत्री बना है। अगर किसान के बेटे की सरकार गिरी नहीं तो हम कुछ सुझाव दे रहे हैं जिसको अपनाकर सरकारी ढांचे में ऐसे परिवर्तन लाये जा सकते हैं जिससे सबको पता लग जायेगा कि वाकई किसान का बेटा सरकार चला रहा है—



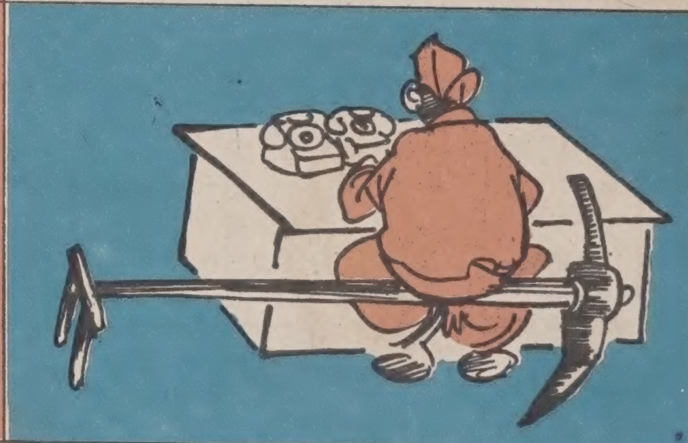
दफ्तर में घण्टियों और टेलीफोन से टर्न-टर्न की आवाज की जगह ऐसी आवाज आये जैसे गाय का बछड़ा चिल्ला रहा हो।



सरकारी कैन्टीनों में केवल गुड़ की चाय सर्व की जाये।



मोटर-गाड़ियों में हौरन की जगह बैल के गले वाली घण्टी का प्रयोग हो।



मन्त्रियों के दफ्तर में मन्त्रियों को कुर्सियों की जगह बैठने को हल मिले ताकि देश की समस्याओं का जल्दी हल मिले।



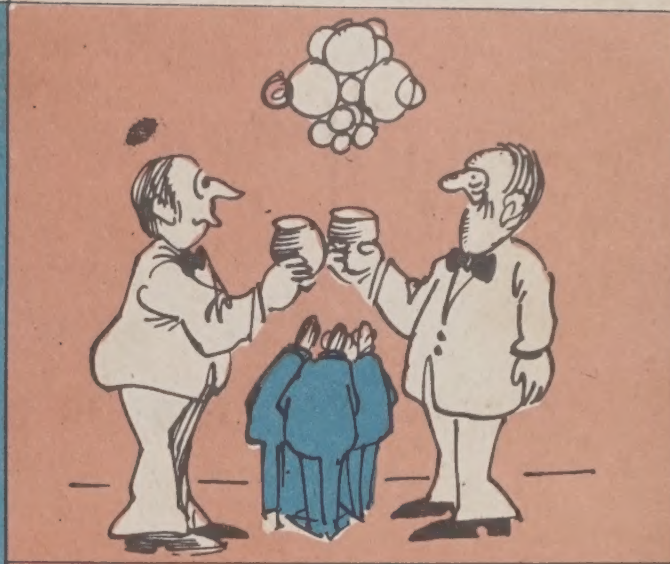
दफ्तरों में कागज दबाने के लिये पेपर वेट की जगह गोबर के कण्डे दिये जायें।



फिल्म स्टार आटोग्राफ बुक में हस्ताक्षर को जगह अंगूठा लगायें।



विदेशी मेहमानों का स्वागत फूलों की माला की जगह आलूओं की माला पहना कर किया जाये।



सरकारी कॉकटेल पार्टियों में शैम्पेन की जगह मिट्टी के कुल्हड़ों में देशी ठर्रा दिया जाये।



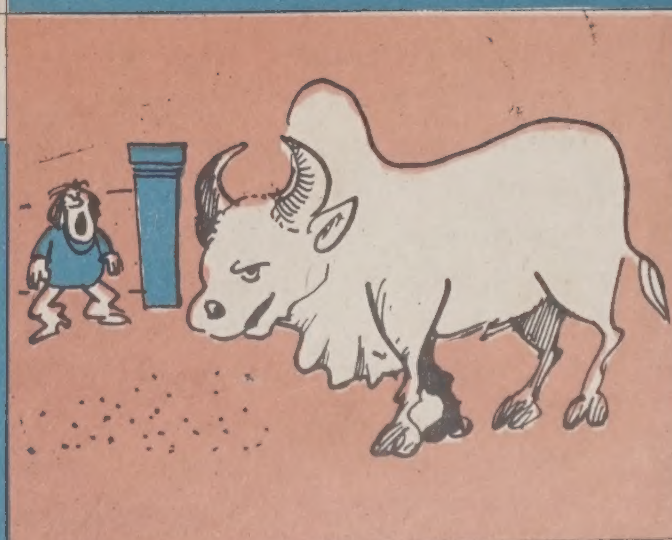
बसों आदि में सिगरेट, बीड़ी पीना तो मना होता है लेकिन हुक्का पीने की छूट दी जाये।

दफ्तर के बाबूओं को, टेबल के बीच में जो खाली खाना होता है उसमें, मुर्गियां पालने की इजाजत मिले।



क्रिकेट में किसानों की हौसला अफजाई के लिये बॉल की जगह गोल बैंगनों का प्रयोग हो।





सरकारी बंगलों और दफ्तरों के लॉनों में गाय, बैल, भैंस व गधों के चरने पर से पाबन्दी हटायी जाये।

तर्क-कुतर्क

सुरिन्द्र सिंह बबूल—मनीपुर

तर्क—देखो कितनी अच्छी शाम है।

कुतर्क—कितनी ?

तर्क—अब कसम खाता हूं।

कुतर्क—इसके बाद क्या खाओगे ?

तर्क—मोहन सारी गृहस्थी का बोझ उठा रहा है।

कुतर्क—पहलवान होगा ?

तर्क—आज तो गला ही बैठ गया

कुतर्क—मंजदूर लगवा कर खड़ा करा लो।

तर्क—बीस साल बाद फिलम चलेगा ?

कुतर्क—तब तक क्या टिकट सस्ती हो जाएगी।

श्याम सुन्दर राजपूत—दिल्ली

तर्क—(पिता) मैं अपनी लड़की की शादी किसी ऊँची जगह पर करूंगा।

कुतर्क—कुतुब मीनार पर ?

पंकज सक्सेना,— कानपुर

तर्क—मैं दीवाना पढ़ता हूं ?

कुतर्क—तो हम कौन सा खाते हैं।

तर्क—मेरी बीबी सारा दिन मेरा भेजा ही खाती है।

कुतर्क—इसलिए मैं सोचता हूं तुम दफ्तर से बीबी को छुपके-२ क्या भेजते हो ?

सुरिन्दर, — मणिपुर

तर्क—ईश्वर कहां रहते हैं ?

कुतर्क—पाखंडियों की जबान पर।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर

तर्क—नेपाल में सबसे बड़ा ताल क्या है ?

कुतर्क—हड़ताल

तर्क—अखबार में क्या छपा है ?

कुतर्क—अक्षर

दिनेशराज बज्राचार्य,—नेपाल

तर्क—मैंने आज एक पनडुब्बी को पानी में तैरते देखा।

कुतर्क—क्या पहले हवा में तैरती थी ?

तर्क—कल दोपहर को पानी चला गया था।

कुतर्क—कहां ! शिमले या मंसूरी ?

तर्क—बिजली फेल हो गई है

कुतर्क—अगले वर्ष पास हो जाएगी।

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२